अवतारकथामृत

اوتار کتھا امرت

श्रीमत्कवि कुल शिरोमणि श्री पण्डित गिरिधरदास रचित॥

जिसमें

संसार के उद्धरण हेतु सात अवतारों की अमृत मयी कथा - मत्स्य १ कूर्म्म २ वाराह ३ नृसिंह ४ वामन ५ परशुराम ६ और श्रीराम ७ की वर्णन है

वही

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के यन्त्रालय में शुद्धतापूर्वक

छपी

जुलाई सन १८७९ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् जून सन् १८७९ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तैय्यार हैं वह इस सूची पत्र में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफायत से घटा कर नियत हुवा परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्योपार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेज कर कीमत का निर्णय करलें ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
व्याकरण और ज्योतिष	वैद्यजीवन	दुर्गा पाठ सटीक
	वैद्यमनोत्सव	दुर्गापाठ मूल
सिद्धान्त चन्द्रिका	अमृत सागर	अपराधभञ्जन स्तोत्र
लघु कौमुदी	अमृत सागर बड़ी	महिम्न स्तोत्र
मुहूर्त्त चिन्तामणि सारिणी	अमर विनोद	श्री गोपाल सहस्रनाम
शीघ्रबोध	जगद विनोद	शिवार्चन
पाराशरी सटीक	वैद्य जीवन	गंगा लहरी
मुहूर्त्त गणपति	औषधि सङ्ग्रह कल्पवल्ली	भगवद्गीता
सङ्ग्रह शिरोमणि	निघण्ट भाषा	भगवती गीता
जातक चन्द्रिका	वैद्य दर्पण	श्रीमद्भागवत सटीक
लघु जातक भाषा टीका	राम विनोद	तथा दशम स्कन्ध
सहित		हनुमान बाहुक
भाषा जातकालंकार	कोष और इतिहास ॥	सुख सागर
संस्कृत जातकालंकार	शिव सिंह सरोज	ब्रह्म सार
जातकाभरण	सामुद्रिक	परमार्थ सार
मुहूर्त्त दीपक	गणित कामधेनु	प्रेम सागर
होरा मकरन्द	कमीशन बड़ोदा	सूरसागर
मुहूर्त्त चिन्तामणि	शब्दार्थ कोष	राग प्रकाश
मुहूर्त्त मार्त्तण्ड	अमर कोष प्रथम काण्ड	भक्तमाल
	अमर कोष तीनों काण्ड	अवध यात्रा
वैद्यक	भाषा टीका सहित	कथा गङ्गा जी
	अनेकार्थ कोष	रामायण टेप की
शार्ङ्गधर सटीक	ब्रज विलास	रामायण जिल्द बन्धी

सूचीपत्र ॥

भूमिका

—·※·—

काशीमें वर्तमान समयमें जो श्री बाबू हरिश्चन्द्रजी बड़े प्रसिद्ध कवि हैं उनके पिता का बनाया हुआ यह ग्रन्थ है इनका नाम श्री युक्त बाबू गोपाल चन्द्रजी था और काशी के प्रसिद्ध धनिक श्रीयुत बाबू हर्षचन्द्र जीके यह पुत्र थे॥ धनिक होनेहीपर नहीं देहली, मुरशिदाबाद, राजमहल और लखनऊ आदि स्थानों में उनके पूर्व पुरुषों ने बाद-शाही ज़माने में बड़े बड़े काम करके केवल धनही नहीं परंच बड़ा मान प्राप्त किया था और उनमें राजा आनन्द चन्द्र बहादुर रायरत्नचन्द्र बहादुर इत्यादि लोगों के नाम अद्यापि उस देश के इतिहासों में प्रसिद्ध हैं श्री युत बाबू गोपालचन्द्र जीकी अपने गुरू श्री गिरिधरजी महाराजमें अत्यन्त भक्ति थी इससे उन्होंने अपना धर्म औ कविता सम्बन्धी नाम गिरिधरदास रक्खाथा ये संस्कृत और भाषा दोनों के बड़े भारी कवि थे सब ग्रन्थ जो उन्होंने बनाये हैं यदि उनकी संख्या की जाय तो लाख श्लोक से भी ऊपर होगा इनकी बुद्धि ऐसी तीक्ष्णथी कि अवस्थाके तेरह वर्ष समाप्त होने के पूर्व बाल्मीकी रामायण का छन्दों में अनु-वाद उन्होंने समाप्त कर दिया यह कथामृत ग्रन्थ भी जो दो भाग में प्रकाश किया जाता है इनही का बनाया है इसमें दश अवतारों की कथा है जो अत्यन्त सुन्दर छन्दों में रचितहै इसमें मत्स्य वाराह कच्छ नृसिंह वामन परशु-राम और श्रीराम कथामृत एक खण्ड में और बलराम बौद्ध और कल्कि कथाऽमृत दूसरे खण्ड में प्रकाशित होंगे

इनमें बलराम कथाऽमृत में श्रीकृष्ण चरित्र बहुत बिस्तार से और अत्यन्त सुन्दर रूप से लिखा है अब यह पुस्तक कविजन कीर्त्तिहितेच्छु गुणिजन रंजन महामहिम श्री युक्त मुंशी नवलकिशोर साहब की इच्छा से रसिकजनों के आनन्द के हेतु छाप कर प्रकाश की जाती है आशा है कि सब लोग इसको बड़े आदर से स्वीकार करेंगे ॥

इति

॥ श्री गोपीजन वल्लभायनमः ॥

अथ अवतार कथामृत

लिख्यते ॥

मत्स्यकथा प्रारम्भः ॥

दोहा ॥

सुन्दर सुखद सरोज से वल्लभ जू के पांय।
सुमिरत सुभ सरसांहि सब शोक मोह भ्रम जांय १॥
नन्दन प्रभु श्रीनन्द के कारन सकल आनन्द।
सुमिरत गोकुल चन्द पद दूर दुरैं दुख द्वन्द २॥
सुमिरि मीन भगवान के पीन करम सुखमूल।
चारु कथा कथिवे चहत दूरि करनि भवशूल ३॥

चौपाई ॥

सत युग आदि भयो बलधाम। दानव अधम संख यह नाम॥ महा मेरु सम उन्नत काया। जानै सकल भांतिकी माया ४॥ कन्दर सरिस नाक अरुकान। नभलौं अंवेगये बिपान॥ बढ़े बार बढ़नी सम सुख के। काढ़े दांतदीरघ दिपुरुखके ५॥ महा उदर अति श्यामशरीर। लोचन चक्र सरिस गंभीर॥ रसना रकत रकत की प्यासी। काढ़ी बिवर तें सर्प सुतासी ६॥ लटकत दोउ कपाल के चमरा। मानहुं फैलासा एक भरा॥ महावेग अरु महा कराल। महा कुटिल दानव कुल पाल ७॥

दो० सो दानव दुनियां दुखद उर विचार करि नीच।
चारहु बेद चोरायकै धस्यो सिन्धुके बीच ८॥
बिना वेदविधि बिबुध वर खेदि विविध बिधिकीन।
बिबुध बिप्रद्वन्दन सहित भये दीन अति छीन ९॥

सो० बेदचार जग सार धर्म अधार प्रचारकर।
हरे असुर सरदार लोप अचार बिचारभो १०॥

दो० कारबार संसारको सार सकल व्यवहार।
वेद बिना रुकतोभयो दुखी देव भरतार ११ ॥

चौपाई ॥

विधि आदिक व्याकुल सब देव । सुमिरन कियो हरिहि गुनि भेव ॥ जय अनन्त जय जय जगदीश । जय मुकुन्द वंदित बिधि ईश १२ ॥ जय करुणा कर नीरज नैन । जय माधव जय फणिपति शैन ॥ जयजय शङ्ख चक्रधर प्यारे । गदापाणि सरसीरुह धारे १३ । विश्वभरण पोषण परमेश । रमारमण दुख तिमिर दिनेश ॥ वैनतेय बाहन बलशाली । विश्वम्भर जनपति बनमाली १४ । करिकै कृपा हरहु दुखभारी । दरहु दुष्ट दानव अघकारी ॥ हरिकै वेद गयोलै सोई । तिनबिन बिश्वकाम नहिं होई १५ ॥

दो० बिना वेदके हरनहै करी अरजहै सोइ।
सब देवनकी शरन है कृपा करहु गति जोइ १६ ॥

तोटक ॥

सुनिकै सब देवन की बतियां । गुनिकै तब भेवन की भतियां ॥ कहते करुणा करि कृष्ण भये । बिधि शंकरबंदित प्रेममये १७ ॥ बधिहौं रिपुकों अब धीरधरौ । डरतें सब संशय दूरिकरौ ॥ सुनिकै हरिकी इमि व्योम गिरा । मन देवनके अतिमोद थिरा १८ ॥ विधि शंकर शेषहुतास रवी । जल नाथ धनाधिप आदि सबी ॥ जगदीश्वर को यश गावत भे । छवि छावत धाम न आवतभे १९ ॥

दो० सोई समय मनुहै खरे अर्घ हाथमैं लीन।
देनचहे दिननाथ कहं वर नरनाथ प्रवीन २० ॥

चौपाई ॥

चैतसुदी पांचै बनि मीन । तिन करतैं हरि गिरे प्रवीन ॥ लखि मनु मीन जियन अभिलाखो । पञ्चपात्र महं ताकहं राखो २१ ॥ क्षणमहं बढ़िसोपात्र पुरायो । तबै कमण्डलके मधि नायो ॥ भरो कमण्डल छिन नहिं रहो । मीन दीन मनु मनुतें कहो २२ ॥ मोकहं धरहु बड़े बरतनमैं । जामैं

कष्ट होइ नहिं तनमैं ॥ चकित धरापति धरा कमोरा। क्षणमहं बढ़िकै ताकहं फोरा २३ ॥ मीनहिं तबै कूप महं डारो। बढ्यौ शरीरगयो भरि सारो ॥ बहुरि कहा मोहिं इत दुख भारो। तब बापी के मधि नृप धारो २४ ॥ बढ़त बावली भरिगइ सारी। कहेउ काढ़िये नृपव्रतधारी ॥ तब मनु काढ़ि मीनसो मीन। डारि बड़े तड़ाग महं दीन २५ ॥ चितवत चकित राउ भरिचाऊ। छिनमहं भरिगो सकल तलाऊ ॥ बहुरि कहा संङसतमैं यामैं। तब नृप धरतभये सरितामैं २६ ॥ तामैं परत बढ़ो सो मीन। काढ़हु बहुरि कह्यौ अतिदीन ॥ तब निकारि कै ता सरितातें। डारेउ सागर हरष महातें २७ ॥

दो० तामैं श्रीभगवान हरि बढ़िकै उन्नतकाय।
 चीनो चारहुवेद कहं शंख धाम महंजाय २८ ॥
 शङ्खपाणि कहं देखिकै शङ्ख असुर सरदार।
 मूरख झख मारण चल्यौ करिसु महा ललकार २९ ॥
सो० इततें सफरी रूप देवभूप अतिरिस भरे।
 उततें लोचन कूप गरजत खल शूलहि धरे ३० ॥

तोटक ॥

तड़िता समशूल घुमायमहा। हरिपैं तजिकै मतिभागु कहा ॥ तब चक्रहि बक्र प्रहारि हरी। दहि शूलहि गर्बहि चीनहरी ३१ ॥ पुनि गर्जत तर्जत नाहकसो। रणचाहक वीर बलाहक सो। धनु तानि अनेकन बाण हने। बर सर्पसमान महानबने ३२ ॥ सरसीरुह लोचन तीरनसों। सुलसेरविज्यों निज कीरनसों ॥ तरवारि निकारि महा छबिकी। तकि मारेउ ज्योंजननी पविकी ३३ ॥ नन्दनन्दन नन्दक मारितबै। तेहि व्यर्थकियो निरख्यो सुसबै ॥ पुनि भांति अनेक अदेव लख्यौ। हरि आयुधतें मन माहिं डर्यौ ३४ ॥ तब केशव काढ़ि रथांग महा। करतें खलको द्रुत केश गहा ॥ धरतें सिरको करिदीन्ह जुदा। लखि आवतभे सबदेव मुदा ३५ ॥

दो० करि प्रणाम निज नाम सह जोरिहाथ अभिराम।

बर अस्तुति करते भये प्रमुदित पूरण काम ३६ ॥

तोमर छन्द ॥

जय शङ्ख सूदन रूप। जय चारु कीर्त्ति अनूप ॥ जय ईश अद्भुत मीन। जयजय पराक्रम पीन ३७ जय चक्रपाणि महीश। जय शंभुसुरन ईश ॥ जयविश्व विग्रह विष्णु। जय जयतिवंदित जिष्णु ३८ ॥ जयवेद बेदित काय। जय विश्वके सुखदाय ॥ जय मोदमैं जगरूप। जय देवमानव भूप ३९ ॥ जय दुन्दहारि मुकुन्द। जयमाल शोभित कुन्द ॥ जयविश्वमै जगहेतु। जय पच्छिनायककेतु ४० ॥ जय नीलनीरज नैन। जय सर्वमै सुखऐन ॥ जय देवभूतल जैन। जयशैति मोहन मैन ४१ ॥ जयवेद गूढ स्वरूप। जयब्रह्मईश अनूप ॥ भवकूप तारणरूप। जयतीनहुंपुर भूप ४२ ॥ जयनारदादि ऋषीन। पदनित्य बंदित मीन ॥ अपने अधार असीन। जय दैवप्रज्ञ प्रवीन ४३ ॥ जयसत्वमूरति स्वच्छ। जयभक्तपैं कतरच्छ ॥ जय दच्छ पूरणपच्छ। जयलोक जीवनमच्छ ४४ ॥ शिवदास त्यों सुखचारि। शशि सूरनयन सुरारि ॥ बपु विश्वमै सुखकारि दरपानि जैदनुजारि ४५ ॥ जगबीचहै असकौन। गुणतो कहै सबकौन ॥ जगदीश जै गुणभौन। करियैकृपा शिरदौन ४६ ॥

दो० इमि अस्तुति सुनि सुरन की दीनबंधु हरि मीन।
शंख उदरतें काढ़िकै शंखहि करमहं लीन ४७ ॥

सो० इहि विधान भगवान शंखासुर मारतभये।
गुणनिधान सुर चाण वेद विधाताकहदये ४८ ॥

दो० इमि सुलीन अवतार यह तारणभव वारीश।
सुनिहैं पढ़िहैं तेमनुज चढ़िहैं बिधिपुर शीश ४९ ॥
ऋतु नभ ग्रहशशि संवत दशमी भादवमास।
मंगल कार मंगल दिवस पूरण भो इतिहास ५० ॥
भज हरिभक्त मदादि घनजल दुख कर्म बतास।
तहंनिजकरुणागिरिधरणगिरिधरगिरिधरदास ५१ ॥

इतिश्री गिरिधरदासबिरचितं मत्स्यावतारकथामृतंसमाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥

अथ बाराहकथामृत लिख्यते ॥

दोहा ॥

गिरिधर गुणनिधि के चरण अंबुज उरमहं ल्याइ ।
बरणत बरबाराह को जन्म जगत सुखदाइ १ ॥
श्रीमद्वल्लभ के कुंवर बिट्ठल परम उदार ।
करिसु कृपा करिदेहिंगे मोर मनोरथ पार २ ॥
असुर अज्ञान समुद्र भव सुमति धरणिहरि लीन ।
नाम बराह बराह को तहं उधार हित कीन ३ ॥

चौपाई ॥

आदि लोक बैकुण्ठ महान । जहं निवसत श्रीकृपानि-
धान ॥ जौन परमपद परमप्रकास । जहं हरिदास करहिं
बरबास ४ ॥ जो यांचहिं योगीजन ज्ञानी । जो अक्षर अच्युत
श्रुतिवानी ॥ पूजनीय जो शंकर बिधितें । जो सबकाल
भरोसबनिधितें ५ ॥ नारद सनकसनन्दन आदी । जेहिसेवहिं
सुख भरि मरजादी ॥ ताकी छबिलखि कै छबिथाकी । को
कहिसकै बिरचना वाकी ६ ॥

दो० श्री वैकुण्ठनिवास थल श्री बैकुण्ठ सुनाम ।
कनक मयी रत्नजड़ी परमा भरो ललाम ७ ॥

हरिगीती ॥

भरो परमललाम परमापुहुमि पन्नन जगमगी । हाटक
रचित फाटकसरस शशिकांति कोटिन मणिलगी ॥ शुक
मोर सारस रत्नके राजहिं बनाये सोहने । माणिक मनो-
हर भीत बज्रनग जटित सोछबिकोगने ८ ॥ जाही जुही बेला
चमेली कमल केतकि केवरा । मालती मौलसिरी बिराजत
कल्पतरु सुमनन भरा ॥ अति मंद मंद सुगन्ध शीतल सरस
मारुत भरिरह्यो । संतत अनंत समंतसों सु अनंद उरमहं

करिरह्यो ९॥ सुन्दर सरोवर सरस शीतलजल समेतसरोज
के। राजहिंकिनारे विविधि साखज चिचमिच मनोज के॥
जहंके निवासी मनुज बरहरिदास हरिसम बपुधरे। सबकाल
अतिहि निहारते नन्दलाल के सन्मुख खरे१०॥ पर धाम
जहं घनश्याम राजहिं बाम बामदिशालसै। भरि प्रेमनिज
महं हंसैं अति सुखरसैं सुमन ससोखसै॥ कर शंख चक्र
गदा सरोज सदा सबै आनन्दहीं। बिधि शंभु नारद शेष
सुरपति अमरनर मुनि बंदहीं ११॥ इककाल मैं विधिलाल
अतिहि दयाल चारुभावते। सनकादि बालखरूपमे हरि
धाम द्वारे आवते॥ जय विजय दोऊ पारषद तहं बेत सों
आड़त भये॥ भरिकोपक्रुरि प्रेरित तहां मुनि शाप कहं
छांड़त भये १२॥

दो० हैश्चयोग बैकुण्ठके सहित मोह अरु द्रोह।
तातें महिमहं जायके असुरअधी अतिहोइ॥
सो० मुनि मुनिवरको शाप आप श्याम आवतभये।
जोबिधि हरहि दुरापसो छबि दरशावतभये १४॥

छप्पय॥

चारु चरण दुख हरण बरण बारिजसे सोहत। कटि
किंकिणि पटपीत सुछबि दामिनिद्युति मोहत॥ चारभुजा
सुख सींवग्रींव पदलौं बनमाला। कुण्डल झलक कपोलगोल
अति लोल रसाला॥ मृदु मुसुकनि सों भय हरण शीश
तिलक सुखमा भरत। सुन्दर किरीट की लटकपैं अटक
रहत मननहिं टरत १५॥ नन्दसुनन्द प्रचण्डचण्ड कुमुदाक्ष
कुमुदबर। अर्हण प्रबल खगेश शेष श्री सुखद मनोहर॥
बिष्वकसेन सुचक्रचारु बारिजसारंगसर। कौमोदकि शत
चन्द्रजलज नन्दक बर बपुधर॥ बिधिशंभु कुमारवशिष्ठशुक
नारदादि पार्षद सहित। तितशोभित भये मुकुन्दप्रभु कुंद
मालधर जगत हित १६॥

दो० लखि प्रणाम मुनियनकियो रहे खरूपनिहारि।
जितनिरख्यो तिततेंन ते सकेदृष्टि कहंटारि १७॥

सनक आदिकन इमिकह्यौ क्षमियैमम अपराधु।
हरिभाष्यौ उचितहिकियो दंडदियो चितसाधु १८॥

चौपाई॥

तीन जन्म प्रमाण करिराखो। पहिले हम रक्षव सुनि भाषो॥ द्वितिय जन्म मैं रक्षा बखाना। तीजे मैं तिहुं मैं भगवाना १९॥ सोई शाप पाइकै भारे। तीन जन्म अबनी अवतारे॥ कनक कशिपु अरु कंचन नैन। रावण कुम्भ-करण जगजैन २०॥ दंतवक्र शिशुपाल सुजान। धरिधरि रूप बध्यो भगवान॥ एकसमय संध्याकी बेरा। दितिनिजनाथ कश्यपहि हेरा २१॥ रतिमांग्यो सुनिवचन निकाला। यह संध्याकर दारुण काला॥ कामविवस जब वाम न माना। तबदीन्हो मुनि रतिकरदाना २२॥ भाषाबहुरि होहिं सुत तोही। सदा संत सुरगणके द्रोही॥ मुनिकै खेदकीन्ह दिति जबहीं। गुनिकै मुनिवर भाषो तबहीं २३॥ तब सुत हेतु विष्णु अवतारा। यह सुनि दितिसो गर्भहि धारा॥ लागे होनअमित उतपाता। दिशातिमिरभो कछु न दिखाता२४॥ उल्का गिरहिं दिवस महं तोरे। ग्रस्यो राहु ग्रह नाहु सवारे॥ पवन प्रचण्ड धूरि नभछाई। रोवहिं रासभ स्यार बिलाई २५॥ डोलत धरणि क्षुभित नदनाह। होन लगो दारुण दिकदाह॥ देवनके दृग पूरे पानी। खगमृग कहहिं दीन समबानी २६॥ ऋतु मासन के रूप भुलाने। कमल सकल जल माहिं सुखाने॥ भानु मरीचि टूटि महिपरई। विनापर्व चन्द्रहि ध्वज धरई॥ २७॥

दो॰ गत उछाह जग होत भो प्रलय काल सो काल।
देव तबै सोचन लगे अनरथ होय कराल॥ २८॥

प्रमाणिकाछन्द॥

गए विरंचि पास मैं। कह्यौ सबै उदास मैं॥ तबै तिन्हैं सबै कथा। यथा रही कही तथा २९॥ दइत्य होय होइ हैं। तुम्हार वीर्य खोइ हैं॥ महा कुकर्म धारिहैं। तबै मुकुन्द मारिहैं॥ सुजाहु धीर धारिकै। भविष्य को बिचारि कै॥

तबै सबै सचेत ह्वै। गए घरैं अचेत ह्वै ३१॥ दिती विचार सों मई। प्रताब्द धारती भई॥ महान गर्भ आपको। भरो प्रभा प्रताप को ३२॥ सुजन्म काल आइगो। अंधार भूमि छाइगो॥ महान तेजते भए। कुमार जन्मते भए॥ ३३॥

दो० हाथ गदा गुड़ आयसो लगे शीश असमान।
घंटनकी कटिकिंकिणी गर्जत शब्द महान॥ ३४॥

सो० ब्रह्मा कीन्हो नाम प्रथम हिरण्यकशिपु बली।
हिरण्याक्षबलधाम दूजोवर अरिदल दली॥ ३५॥

कवित्त॥

पांवकी पटक सेस शीशमें खटक होत धरणी चरणसिर लागत अकाशही। घुटुनालौं होत सबै वारि वारिनिधि केरी गेंदागिरिमेरु आदि खेलैं बेप्रयासही॥ गरजनि तीन लोक गरभ गिराय देति परम प्रताप पूरि महीलौं प्रभासही। टक्कर लरायबेकों इन्द्र औ कुबेर यम पक्करि लरायबे कों रवि शशि पासही॥ ३६॥

दो० जीतिलियो त्रयलोक कहं करत राज असुरेश।
राजा कांचन कशिपुवर अनुज तसौलत देश॥ ३७॥

तोटक॥

धरणी कहं लै जल बीच गयो। कनकाक्ष महान गरूर भयो॥ सब सृष्टि गई रुकिकै विधिकी। कछु बूझि परै न तबै विधि की॥ ३८॥ तिहि काल उदास प्रजेश महा। मुखतें हरि केशव कृष्ण कहा॥ तुम व्यापक ईश्वरहौ सब के। नहिं सृष्टि रही यह है। तबके॥ ३९ महिकों हरिकै जल दैत्य गया। गुनि सोहरि कीजिय दीन दया॥ किमि साजिय सृष्टि बिनाजगती। न उपाय कछू ममहै लगती ४० हमकों तुम त्यागिन आसकोऊ। प्रभु जानतहौ सब भांति सोऊ। हमशंकर सूरज आदिभलैं। सिगरेतुमरे अनुसार चलैं ४१॥ जिमिदारु बधू कहं चारुगुनी। सुनचावत आपुनिभांति गुनी॥ तिमि आप नचावत विश्वसबै। तबरञ्चत संक होत जबै ४२॥ जगदीस दयाकरिकै हरिजू। दुख

एक सुलेक सबै हरिजू ॥ इमि भाषत ही मति भ्रम सई।
तुरतैं विधि जू कहं छींक भई ४३ ॥
दो० कढ़े अंगुष्ठ प्रमाण के श्वेतबरण बाराह।
चैत कृष्णतेरस दिवस पूणी विधि मनचाह ४४ ॥
बढ़नलगे बाराहजू सम खग नर गज सैल।
क्षणमहं कोटिन कोसलौं गये तिहीयल फैल ४५ ॥
बसुकाणा ॥
विधि आदिदेव। शुनि कृष्णभेव ॥ कर जोरिजोरि। दुख मोरिमोरि ४६ ॥ सिरनाइनाइ। छबिछाइछाइ॥ अस्तुति अपार। कीन्हीउचार ४७ ॥ जय देवदेव। जय अलखभेव ॥ जय जगत रूप। जय अखिल भूप ४८ ॥ जय जय वराह। जय धरणिनाह ॥ जय चक्रपानि। आनन्द दानि ४९ ॥ जय अतिउदार। करुणा अगार ॥ जय कोल कच्छ। खगनाह मच्छ ५० ॥ जयजय मुकुन्द। जयहरणद्वन्द ॥ जय पुण्यकन्द। जय दुखनिकन्द ५१ ॥ जय वपुअनन्द। जय जगतचन्द ॥ जय जग निवास। दिनकर प्रकास ५२ ॥ जय कमलनैन। संसार चैन ॥ जय विश्वनाथ। जय पुण्यगाथ ५३ ॥ जय हरमनेश। बन्दित हमेश ॥ सुखकर विशेश। जयजय रमेश ५४ ॥ जय शुद्ध सत्व। जयपरमतत्व ॥ जय ब्रह्मरूप। साक्षीस्वरूप ५५ ॥ जय सर्प शैन। जय जगत जैन ॥ जय पुण्य भौन। आनन्द भौन ५६ ॥ जय रमारौन। गजराजगौन ॥ जय अखिलईश। बंदित फणीश ५७ ॥ जय परंज्योति। परमा तनोति ॥ जय शुखनिधान। अतिही सुजान ५८ ॥ जय कथित वेद। जय मथितवेद ॥ जय प्रथितवेद। जय अथितवेद ५९ ॥ जय श्वेत कोल। जय नैनलोल ॥ कञ्जनदगारि। जयजय मुरारि ६० ॥ जय धरणधीर। जय विदितवीर ॥ जय अमलअङ्ग। जय रद उतङ्ग ६१ ॥ जय कृष्णजिष्णु। जय नमितजिष्णु ॥ जय असुर काल। जय विश्वपाल ६२ ॥
दो० इमि तिनतें बंदित मुदित प्रविशिगये मधिबारि।
जगन्नाथ करुणा करणचले धराकहं धारि ६३ ॥

चौपाई ॥

तिहि क्षण कनक नयन निरितेश । गयोरह्यो जितबसत जलेश ॥ जाय बरुणसों वचन बखाना । तुम जलेश बल बुद्धि निधाना ६४ ॥ राजसूय कीनो जगजीति । हमसन लरहु करहु जनि भीति ॥ बरुण कहा हम मानीहारि । तुमतें लरिहैं विष्णु मुरारि ६५ ॥ सुनिसो चला भरा मदभारा । मगमहं कलहप्रियहि निहारा ॥ करिप्रणाम पूछेसि भगवानहिं । नारदभाषेउ असुरप्रधानहिं ६६ ॥ अबहीं विष्णु बने बाराह । हरेजात महि दानवनाह ॥ लड़िबारहु तिहि बड़अभिमाना । सुनिखल आसुचला रिसिसाना ६७ ॥ तुरत जाय देखेसि महि लीन्हे । चलेजात अतिहो गतिकीन्हे ॥ हंसो गरजि सोबोलो ऐसो । यहवन मृग बनमहं किमिपैसो ६८ ॥ अरेचोर कितभगत अभागे । कपट कोलनहिं बनिहैभागे ॥ बहुदिन खोजि आजतोहि पायो । लरु तजिकै छल रे अघ छायो ६९ ॥ अबहिं तोहि करिहौं गतआयु । हरितेहि गुना यकतबस वायु ॥ कहा अरेनहिं जल्पहिं सूर । थिरिकै लरु जो भयो गरूर ७० ॥ इमि तिहि कहत महत बलधाम । कढ़ेबारितें हरि अभिराम ॥ धराबारि धारा पर धारी । निजसत्ता अधार करिभारी ७० ॥

दो० ठाढ़ ह्वैगे भूमिपर तालठोंकि भगवान ।
टेरि ताहि गरजनलगे जगन्नाथ सुरत्रान ७२ ॥

छन्द तोमर ॥

करलैगदा हरिहेरिकै । तजतो भयो खलटेरिकै ॥ हरि ताहि धारिन हींचले । गरजतभे रिसिसों भले ७३ ॥ पुनि दैत्यकोप महाठयो । असि चर्मलै लरतो भयो ॥ तब श्याम मारतभे गदा । परिकै चक्यो भरिकैमदा ७४ ॥ पुनिमूकसो हरिकों हनो । गरजत्त घोरभयावनो ॥ सहिताहि श्याम रहे खरे । उरबीच क्रोध महाधरे ७ ॥ हिरण्याक्ष के सब युद्धकों । सुरवृन्द देखहिं शुद्धकों ॥ जयजयकहैं नंदलालकी । क्षय होइ दानवपालकी ७६ ॥ हरि जोरसों उरमें पर्यो ।

करिके सुमायहि सोलग्यो॥ तिहिकाल सङ्गरठौरमें। तम पूरिगो सबओरमें ७७॥

हरिगीती॥

सब ओर में तम पूरिगो गरजन लगे घनघेरिकै। पादप उपल गिरिगज्ज निशिचर तजनलागे टेरिकै॥ धकमारुधक धक मारुधकधक मारुधुनि दिशिभरिरह्यो। बोछारशोणित पीयमदिरा मूत्रकी अतिपरिरह्यो ७८॥ योगिनी डाकिनि प्रेत साकिनि अट्टहास पुकारहीं। नृत्यहिं रुधिर खप्पर भरहिं गावहिंमहा ललकारहीं॥ मायामयीसुरमनुजकहँ गहिखाहिं कोटिन निशिचरा। गिनि बैर गाजर गावजन कड़कड़ शब्द दशदिशिभरा ७९॥ सहपच्छ उड़हिं पहार पादप सिंह बहुविधि डोलहीं। गज्ज भच्छ गज्जगज्ज भच्छ भच्छ प्रतच्छ दानवबोलहीं॥ अतिशब्दपूर्यो धरणि डोलति गिरति तड़िता जोरसों। सातऊ समुद्र उमड़ि बोरत वसुमती सबओरसों ८०॥ इमि देखिमाया असुरकी सब देव डरपतिदुखमए। ब्रह्मादि जयजयकार करि भगवान सों भाषतभए॥ इहिविधिय वेगिकृपाल संध्याकाल दारुण आवतो। जे।जोरअतिहीघोरआसुरअङ्गबीच बढ़ावतो८१॥

दो० सुनिहरि चक्रहि सांगिकै मायादीन्ही नाशि।
बहुरि सामुहें होयकै गरज्यो खलबलराशि ८२॥

चौपाई॥

विविधभांतितें करै लराई। प्रगटै दुरै दुरै प्रगटाई॥ अमित शस्त्रतें करैप्रहारा। कहतकि अब इहि मारामारा ८३॥ बहुरि गदामारेसि बलबरतें। कौमोदकी गिरीहरिकरतें॥ लखिदेवन कियहाहाकारा। अब न बचतयह दैत्य पुकारा ८४॥ बनचर धरम समर हम करहीं। नहीं निरायुध के संग लरहीं॥ पकरुगदा लरु अभय अधरमी। मायावीस्वग कुत्सित करमी ८५॥ तब लीन्हीकर गदाउदारा। हरिहिं तमकि खल मूका मारा॥ केशव झपटि केशगहि लीन्हीं। पटकि मारिपद अरिवधकीन्हीं ८६॥ परा असाणधरा।

पर सोई। अमरनतें अजेय अतिजोई॥ छूटे केश भरा तन जोह्न। भूषण गिरे भरे रण सोह्न ८७॥ हाटकलोचन बध लखि सगरे। बिधि हरादि सुरमुनि गण अगरे॥ कारकरि कमल कणीके रूप। लागे अस्तुति करनअनूप ८८॥

दो॰ जयबराह जयदैत्य दर जयजनेश जगदीश।
करिसुक्रपा असुरहि हत्यो तुमकहं बन्दत ईश ८९॥

प्रमाणिका॥

नमामि शुक्लशूकरं। धराधरं कृपाकरं॥ नतोस्मि चक्र धारिणं। सुरद्विषांत कारिणं ९०॥ बिरञ्चि शंभु सेवितम्। श्रियार्चितं श्रियान्वितं॥ मुकुन्द मब्ज लोचनं। अघौघवृन्द मोचनं ९१॥ समस्त कार्य कारिणं। नतोस्मिभूमिधारिणं। हिरण्य नेत्र खण्डनं। नमामि विश्व मण्डनं ९२॥ हिरण्य कोटि नायकं। भजामि मुक्ति दायकं॥ पवित्रकीर्त्तनंबिभुम्। परात्परं परंप्रभुम् ९३॥ जगन्निवास मच्युतं। अनेक पार्षदैर्युतं॥ सरी अपास नाशनं। मरीचि पौच नाशनं ९४॥ गणेश्वरा तपीश्वरैः। बिरञ्चिमा फणीश्वरैः॥ प्रपूज्य पाद पङ्कजं। नमाम्यहं बिराडजं ९५॥ परेश्वरं गदाधरं। बरेण्य मम्बरंवरं॥ भुजङ्ग शायिनं परं। नतोऽस्म्यहं दयाकरं ९६॥ दुरंतबीर्य बिक्रमं। त्रिलोकपं त्रिबिक्रमं॥ महीधरं महाद्युतिं। नमामि शूकराकृतिं ९७॥

दो॰ इमि अस्तुति अमरनकरी बारबार पदबन्दि।
अन्तरध्यान भयेहरी तेपुनगये अनन्दि ९८॥
इमि बरण्यो बाराहको जन्मजगत सुखरूप॥
मुनिपढ़ि धरि तरिहैं मनुज भवमहान भयकूप ९९॥
श्रीगोपीजन बल्लभ बल्लभवल्लभ नाम।
तिनकी किरपाहोतभो यहहरिचरित ललाम १००

सो॰ गङ्गानिकट पियास खोदत कूपहि बुद्धि हत।
हरितजिगिरिधरदास अपरअमरकहंजोभजत१०१॥

इतिश्री गिरिधरदास बिरचितं बाराह कथामृतं समाप्तम्॥

———

अथ नृसिंह कथामृत लिख्यते ॥

दोहा ॥

श्रीवल्लभ आचार्य के सुमिरत पङ्कजपांय।
कृष्णभक्ति सुरभी उदय शोक मोह भ्रमजांय १ ॥
दोऊ गिरिधरलालए सन्तत सुखदस्वरूप।
करिहैं कृपाकृपात्त अति जानिपस्यौ भवकूप २ ॥
अघअङ्कुश गजयूथपर नरहरि कार हरिनाम।
सुनिगर्जन हरिजनन सुख त्यामहिंतन बनठाम ३ ॥
कनक नयन जब मरिगयो सोसुनिके जनकान।
दिति आदिक नारिन तहां कीन्हो रुदन महान ४ ॥

चौपाई ॥

तेहिक्षण कनककशिपु चलिआयो। अबलन कहं बहु ज्ञानबुझायो ॥ औरन कहत आपनहिं जानत। ताकों बुध जन असुर बखानत ५ ॥

छप्पय ॥

करम बिबशह्वै देहरहै जनमैनसिजाई। मिलै तत्त्व महं तत्त्वजीव यहअमर सदाई ॥ दहैबहै नहिं मरैजरै नहिं घटै न बढ़ई। बैठे नये शरीर पुराने कहं तजि कढ़ई ॥ यासौं नहिंशोचन जोगहै जनम मरण जग जनन कर। धरिधीर काज चाहिय करन सोइ स्वारथ यश जैान बर ६ ॥ मरण रहित ज्यौं जीवदुःखकेजोगन तौहै। तौहुकाको शोच मरै जनमैनितजोहै ॥ जानहिं आगे रह्यौन अब धरणीपरसोहै। बीचभयो अरुगयौ शोचनहिं ताकोसोहै। जेजन जनमे तेमरहिंगे तिनको सोचहथा करब। यहअति असार संसार मैं ह्मत सोइ किम्मत सरब ॥ ७ ॥

दो० मेरो भाई सूर अति मरो समर बढ़ि जौन।
सब प्रकार तें हेति औ सोचन जोग सन तौन ८ ॥

सो० इमि तिन कहं समुझाइ सदन आइ कांचन कशिपु
बोला असुर बुलाइ ज्ञान भुलाइ दइत्यरिपु ॥ ९ ॥

सवैया ॥

विष्णु वध्यो बनि सूकर भ्रातहि मारहुंगो तिहि मैं अवतातें। जाइ करौं तप पर्वत पैं बरलेउंगो इच्छित बिश्व पितातें। हैा जितने तुम बीर सबै यह रक्षहु राज इतैसघ- वातें। देउं मैं ताहि हरो रुधिरांजुलि स्वर्ग में मोद गहै अतिजातें ॥ १० ॥

दो० ब्राह्मण बैष्णव बेद गो विष्णु मूल ए चारि।
इन कहंनाशेहु आपुहीक्षीन होइ अनुजारि॥ ११ ॥

चौपाई ॥

इमि कहि तीन गयो तप करण। सोचेसि अज अच्युत करमरण ॥ मन्दर सुन्दर परवत बरपै। धूप सलिल सीतहि सिर अरपै १२ ॥ ऊरध भुजा अहार विहीनो। एक अंगुष्ठ अधारहि कीनो ॥ इमि तप करत काल बहु बीत्यो। तेज प्रभावकाल बिपरीत्यो १३ ॥ व्याकुल कंपति कम्पति धरणी ॥ धूम सहित अति दिशा बिबरणी ॥ दिनकर निशिकर तेज विहीन। दिशाद्विरद चिकरहिं अति दीन १४ ॥

दो० तब सब सुर बिधि पैं गए जाइ कह्यौ बिरतांत।
राजकरत तपधरतहूं दनुज दुखद जगकांत ॥ १५ ॥

चौपाई ॥

तातें ऐसो करहु बिधाता। जासंबनै सकल बिधिबाता ॥ तबबोले ब्रह्माबिबुधेशा। इच्छितहोइन करहु अंदेशा ॥१६॥ लैपुचनकहंचढ़ेमराल। गे तप तजि तहंदानवपाल ॥ लख्यो अचल अप्राण समसोई। गिरिहु स्वङ्ग उन्नत भुजदोई १७ ॥ करतें छिरकि कामंडलपानी। बरहि बरहु बिधिबोलेबानी ॥ तब सो हैसचेतपद परो। हाथजोरि बोलो मुदभरो १८ ॥

तोटक ॥

तुम पालहु घालहु नाथसबै। थिरचौ थिरथापहु हाथ सबै ॥ जग कारण काल स्वरूप प्रभू। परमेश्वर दीनदयाल

विभू १९ ॥ परमेष्ठि पिता सहदेवपती । सब आदि अनादि महान मती ॥ अज अच्युत अव्यय ईश विधी ॥ करुणाकर आकर बुद्धि निधी २० ॥ अतिकीन्ह कृपा निजदास गुनो । सबके पुरुषा गुण दासि गुनी ॥ बर आपकहे यह मांगत हौं । गत म्रत्यु सदा जग बीच रहौं ॥ २१ ॥

दो० अमर नहीं हमहीं अहैं तुमहिं करैं किमि तात ।
सुनिबिधिबचनहिंगुनिअसुरकहतअपुनिपुनिबात२२
नभमहि सुरबर पसिम्रग अस्त्र शस्त्र दिनरात ।
भीतर-बाहर दशदिशा इनमें होइन घात २३ ॥
एवमस्तु कहि विधि गए ब्रह्मलोक अभिराम ।
मुदितउदित तपतेज रविचलेउ असुरनिजधाम २४॥

चौ० कनककशिपु जब तपहित गयो । तबै इन्द्र इत आवत भयो ॥ देवन सह दुन्दुभी बजाई । जीत्यो सकल असुर समुदाई ॥ २५ ॥ तहां हिरण्यकशिपु की नारी । गर्भवती दुतिवती निहारी ॥ ता तिय कहं लिवाइ निज साथ । प्रमुदित चले सदन सुरनाथ २६ ॥ मगमहं मिले ब्रह्मसुत ज्ञाता । हंसिबोले बासव सोंबाता ॥ किहिहित लियेजात परनारी । बोले सुनत शक्र ब्रतधारी २७ ॥ याके गर्भ महा दुति बालक । ह्वैहै विबुध वंश को घालक ॥ तातें लिये जात परनारी । बोले सुनत शक्र ब्रतधारी २७ ॥ याके गर्भ महा दुति बालक । ह्वैहै बिबुध वंशको घालक । ताते तिहि नसाइ सुनिराई । तजिहौं तियहि यथा दुखजाई २८ तब नारद बोले यह बाता । याके गर्भ कृष्ण जनज्ञाता ॥ जौ करिहौ ताकर अपकार । ह्वैहै सत्यानास तुम्हार २९ ॥

दो० सोसुनि वैष्णव जानिकै करि प्रदच्छिणासात ।
बन्दिचरणनिज घरगये सुरपति मति अवदात ३० ॥
नारद के घर सोरही साधु कयाधू नाम ।
ताते मुनिवर हरिकथा कथहिंपरमअभिराम ३१ ॥

प्रमाणिका ॥

कथा सबै गुपालकी । विनासनी जंजालकी ॥ कुमार सो

सुन्यो करै। बिथारलों हियेधरै ३२ ॥ कयाधु नारि बुद्धिसों। दई उतारि सुद्धिसों ॥ तबै दइत्य आइकै। गयोघरै खिवाइकै ३३ ॥ बलीनको बुलाइकै। बरूथिनी सजाइकै ॥ महानको पठाइकै। सुदुन्दुभी बजाइकै ३४ ॥ चलोकराल कालसो। बलीन में बिशालसो ॥ प्रचण्ड तेज सूरसों। धरै लसत्त सूरसो ३५ ॥

दो० घेरिलियो अमरावती करत भयानक राव।
तिमिवारण बन घेरई सदल महा म्हग राव ३६ ॥

छप्पय ॥

बिप्रचित्त अरु नमुचि प्रमुचि घन रुचि वृषपर्वा। शंकुसिराखल राहु पुलोमादिक संगसर्वा ॥ अट्टहासकरि अट्ट अट्ट रस उमदाये। पकरि पकरि कै जकरि जकरि देवन कहं ल्याये ॥ रवि मरुत मरुत पति बिधु वरुण यमकृशान धनदादि कहं। तब कोप सहित कञ्चन कशिपु कीन्ह्यो अति दृढ़ बंदि महं ३७ ॥

कवित्त ॥

समर उदण्ड बरिबण्ड चण्ड भुजदण्ड लाग्यो नवखण्डराज करण घमण्डसों। मण्डन अखण्डलोक मण्डलको महातेज ग्रीषमके भीषम मध्यान्ह मारतण्डसों ॥ चलत छलत जाके जगती दलत शेष डरैं तीनलोक वासी योकजो प्रचण्डसों। कञ्चन कशिपु रिपुदवन दइत्यदिपु पूर्यो परताप दापबढ़ ब्रह्मण्डसों ३८ ॥

दो० कौचिस्तल हरि पुरगयो तप गुण रमानिवास।
अलखरहे ता अङ्ग महं म्हग म्हगमद सम्यास ३९ ॥

चौपाई ॥

घूमि घूमि सो तीनऊ लोका। अवलोके नहिं हरिहि बिलोका ॥ जान्यो मम भय रिपु मरिगयो। मुदित धाम निज आवत भयो ४० ॥ भये सुवन प्रह्लाद सुजान। परम भागवत तेज निधान ॥ पढ़न जोग सुतकों गुणि राजा। भै बैठावत पढ़िबे काजा ४१ संडा मर्का शुक्र कुमार। बैठे

सो तिनके चटसार॥ जहं बालक बहु असुरनकेरे। पढ़हिं नीति अरु शास्त्र घनेरे ४२ ॥ तहं प्रह्लाद सहित अह्लाद। हरि गुण गावत विगत विषाद॥ जब गुरु जाहिं तबै सब तजनो। सबन सिखाय आप हरिभजनों ४३ ॥ इक दिन लीनों पिता बुलाई। बोलो बचन गोद बैठाई॥ तात पढ़हुगुरु जौन पढ़ायो। सुनिकायाधव बचनसुनायो ४४ ॥

दो० श्रवण कीरतन सुमिरिवों सेवन अरचन जानि।
बंदन दास्य सखापनो आत्म निवेदन मानि ४५ ॥
भक्ति कीजिये कृष्ण की अहै जन्म फल एहु।
पितातुमहूंहरिकहंभजहुसमचितसहितसनेहु ४६ ॥

चौपाई ॥

सुनि सकोप सुत भूमि उपारी। कहत भयो यह वचन सुरारी॥ रे यह काह पढ़त तैं पापी। किमि मति दुखद तोहि यह व्यापी ४७ ॥ इमि कहि दोउ गुरु सुवन बुलाई। कहत असुर बर बचन रिसाई॥ कहा पढ़ायो या अज्ञानिहिं। तेतब कहत भए सुनि बानिहिं ४८ ॥ जानै कौन कहां यह सीखा। हमन कहा न कुसंगहु दीखा॥ आपपढ़ै अरु सबनपढ़ावै। दिनदिन दूनी भगतिबढ़ावै४९॥ कहादैत्यपति पुनिलैजाहू। शिक्षहु सहितजतन अरु चाहू॥ तबतेलायपढ़ावनलागे। नहि प्रह्लाद पूर्वगुणत्यागे ५० ॥

दो० गुरु सुत पूछेउ हे सुवन काको यह मति दुष्ट।
तोहि भई कुलनाशिनी परम हृदय महं पुष्ट ५१ ॥

तोमर ॥

सुनिकै हंसे प्रह्लाद। गुरुज सुनौ सहलाद॥ सबमध्य व्यापक तौन। परब्रह्म श्रीहरि रौन ५२ ॥ विधिशंभुपूजहिं जाहि। गुण शेष गावत चाहि॥ असको मढ़ा अघभौन। हरि को भजै नहिं जौन ५३ ॥

छप्पय ॥

बारिबुन्दतैं प्रथम उदर महंदेह बनावै। माता भोजन साथ तहां भोजन पहुंचावै॥ बहुरि बालकहि काढ़ि दूध

देवै करतारा । भरै उदर भरि जन्म अन्न आदिक व्यवहारा ॥ बरगरभमाहिं जीवत मरतनो रचत आठऊपहर । तेहि कौन कृतघ्नी अधम नर भूलैऽप अति पापधर ५४ ॥

चौपाई ॥

सुनि गुरु कहा कहा यह ज्ञान । सुतहि जनक आयसु परिमान ॥ पढ़ऊनीति जो राजन केरी । इमि कहि लगे पढ़ावन फेरी ५५ ॥ गुरु जव जाहिं तवै कायाधव । लरिकनतें कहवावहिं माधव ॥ भजऊ मुकुन्द जन्म फल एह । वृथा न खोवऊ कंचन देह ५६ ॥

दे।० अतिदुर्लभ नरदेह यह ता मंह है क्षण भंग ।
भजऊ कृष्णभव भय तजऊ सजऊ अनूप उमंग ५७ ॥

भुजङ्ग प्रयात ॥

इही भांतिछोरानकों सो पढ़ावैं । पढ़ैं और विद्या गुरू जव्व आवैं ॥ बहोरैं बुलायो सुतै दैत्यराजा । भयेपूछते सोइ विद्याके काजा ५८ ॥ कथाधू दुलारे तबै यों उचारे । भजौ श्यामकों छोड़िकै कामसारे ॥ तबै कोपतेंपूरि पुत्रैसुपक्रयो । बधौरे बधौ याहि यौं दुष्ट बक्क्यो ५९ ॥

से।० चन्दन बनके बीच कण्टक तरु यह भो प्रगट ।
बधन जोग है नीच तातें करऊ उपाय अब ६० ॥

छप्पय ॥

डास्यौ हिम गिरिगुहा माहिं तित कृष्ण उबास्यौ । गिरितें दियो गिराय तहां कर पर प्रभु धास्यौ ॥ गरनहि कीन्हो असुर सरित जल ऊपर डास्यौ । व्याल व्याल दोउ भगे न कोउ न बदन निहास्यौ ॥ अतिअनल माहिं नाहीं जरे असुरतबै चिन्ततभयो । धुवयाके बैर बिनाश मम पुनि बुलाइ सुत कहंलयो ६१ ॥

दे।० गुरू पुत्रनतें इमि कह्यौ जब ऐहैं गुरुदेव ।
पाशि पाशतें बांधिहैं तौलौं तुम इहि लेव ६२ ॥

चौपाई ॥

पुनि ल्याये घर सण्डामरका । कह्यौ कि हम हैं सण्डा-

मरका॥ धूमकरै तो मरिहौं तोही। यह विद्यादानव कुल द्रोही ६३॥ पुनि प्रहलाद कीन्ह सोइ रहनी। कहैं सदा केशवकी कहनी॥ गुरु पुनि नरराजातें भाषो। सो सुतबोलि बचन अभिलाषो ६४॥ खंभ माहिं बांध्यौं बुधिरासी। कर महं बरकर बाल निकासी॥ बोलो अरे कहां हरितोर। जा बलतें कूदत बरजोर ६५॥ कह प्रहलाद प्रेमके रासी। सो सबके घट अन्तर बासी॥ असुर भाव तजिकै असुरेश। भजहु जगत आधार रमेश ६६॥

दो० कह सो अधमबताउ तेहि नत मैं मारत तोहि।
सुनि करजोरे कहतभे बचन जनक सुखजोहि ६७॥
मोमैं तोमैं खड़ग मैं जहं जहं कह्यौ सुजान।
तहं तहंतें निकरनचहे दीनबंधु भगवान ६८॥
खंभ माहिं कहि रहिगये तातें कढ़े कृपाल।
माधव शुदि चौदस दिवस वैष्णव रिपु के काल ६९॥

छप्पय॥

भयो भयंकर शब्द महान गगड़ गड़ गड़ डड। कूद्यौ खंभ द्वै खण्डकराल कड़ड़ कड़कड़ डड॥ कढ्यौ कोटिरवि तेज झमकि झाझड़ झड़ झड़ डड। भगे दनुजगण देखि स्वरूप ससड़ सड़ सड़ डड॥ भड़भड़ ढभ डड परबत गिरहिं हड डह डड हाली धरणि। अहि कमठ कोलक घरि घर घरे भये तेजतें हत तरणि ७०॥ बिकट बदन अति रदन केश पविवेश चमकत। खड़े कान दृग अरुण अगिन चनगारि बमकत॥ लहलहाति बरजीह दीहतर नाद गरज्जत। गर्भ गिरत सुनि तौन असुरके हृदय लरज्जत॥ करि अट्टहास हरि झाइ तब कूदि खरेहोते भये। लखि अद्भुत दैत्य समूह धरि माथ हाथ रोतेभये ७१॥

दो०नहि नरनहिं केहरि निरखि अचरज सहशुणिकाल।
दौरि गदा मारतभयो तदा असुर बिकराल ७२॥
बहुरि धारि असि चर्मकहं कहतभयो यह बात।
अरे चोर मम बंधु रिपु अबनहिं जीवत जात ७३॥

हरिगीती छन्द॥

नाहिं जात जीवत भाषिकरिकै पैतरे चलतो भयो। गहिछीन हरि हरि असहि जिमि इकवार काढ़ि छलतो भयो॥ पुनिपकरि संध्यासमय बैठेद्वार अति रिसितेंछये। निज नखन उदर विदारि शोणित तासु प्रभुपीवतभये १४॥ गरडारि आंतरि उदर ढूंढत और सुत प्रहलादसो। निरखत खरे दृग जलभरे प्रहलाद सो अहलाद सो॥ सुरदेव किन्नर यक्षयहि विधि शंभु जय जयकरि रहे। पैकोप लखि अतिदुसह मनमनमाहं सिगरे डरिरहे १५॥

दो० समैसमै सुरविप्रगण सनमुख सकहिं नजाय।
परम कोप लखि न्रहरिको खड़ेरहे शिरनाय १६॥

चौपाई॥

तब लक्ष्मी आईं तिनसाथ। देखेउ नाथ महाजगनाथ॥ भागीं समय धाम अकुलानी। नहिं सम पति यह पंकज पानी १७॥ तबै सबन प्रहलाद बुलायो। क्षमा करावहु आपिपठायो॥ जाइचरणपर धरिनिजमाथ। कहप्रहलाद जोरि युगहाथ १८॥ नाथ न मोहिंसमरथ अस्तुतिकी। क्षमाकरन नरहरि अतिदुतिकी। कहंमैं असुर मूढ़ शिशु स्वामी। कहंतव क्षमा कृपाकर नामी १९॥

दो० लियउठाइ उरसाइप्रभु पुनिपुनि चुम्बतमाथ।
परमप्यारकरि मनुज हरि फेरत तनपर हाथ ८०॥

सो० मांगहु वरमनभाव कह्यौ कह्यौ प्रहलाद तब।
प्रभुसो बनिकगनाव जो दासहि देवैचहै ८१॥

चौपाई॥

इच्छा सहजो सेवकहोई। व्यवहारी जगजानियसोई॥ नहिं इच्छामांगनकीनाथ। सुनिहरि हंसेबालकीगाथ८२

दो० तोहितौइच्छानहिंअहै पै ममइच्छामांग।
तब बोले प्रहलादजूदीजैपद अनुराग ८३॥

चौपाई॥

यहतौ अहै याहिका मांगै। पुनि शुनि मांग नीक जे

लागै ॥ कह कायाधव जनक हमारो । अतिपापी पुनि शत्रु तुम्हारो ८४ ॥ ताकीगतिहोवै सोकीजे । यह बरदान दीन हित दीजे ॥ हंसेन्द्रसिंह कही यह बाता । इकइस पुरुषा तरिगे त्राता ८५ ॥ जाकहं तुमसो होइ कुमार । ताकहं मुक्त होत काचार ॥ तब सबसुर प्रह्लाद बुलाये । नर के हरिके सनमुख आये ८६ ॥ ब्रह्मा शंभु सूर बागीश । इनहिं आदि सिगरे सुरईश ॥ करिकरिकै प्रणाम करजोरी । लागे अस्तुति करन अथोरी ८७ ॥

हरिगीती ॥

जय जगतजीवन नरहरे जनदुखहरेकरुणाकरे । दानव दरे परमा भरे प्रह्लाद पति सबसों परे ॥ जगदीश रूप अनन्तवेद भनन्त शंत शिरोमनी । अघहरण आनंद करण पोषण भरण जय त्रिभुवनधनी ॥ ८८ ॥ यह असुर परम कराल सबकहं देतदुखअतिही रह्यौ । तिहिबध्यौप्रभु करि क्रपा अबसब जगत वर आनंद लह्यौ ॥ जब जब परत अति भीर तबहिं शरीर केशवधरतहौ । जिमि जनन कहं सुख होय सोविधि विश्वपालन करतहौ ८९ ॥

दो० इमि देवन अस्तुतिकरी हंसे देवशिरताज ।
ब्रह्मातें बोलतभये देऊकुमारहिराज ९० ॥
तुमकहं इच्छा नाहिं सुत पै मम इच्छासाथ ।
मन्वन्तर लगि होऊगे सबदनुजनके नाथ ९१ ॥
सो० इमिकहि क्रपानिधान श्रीन्रसिंह खलबलदरण ।
ह्वैगये अन्तरध्यान हरबिरञ्चि बन्दित चरण ९२ ॥

चौपाई ॥

तब बिधि बिधितें सबन समेता । राज तिलक कीन्हों जगनेता ॥ मंत्री करिकैभाईतीन । ब्रह्मलोक चलिगयेप्रबीन ९३ ॥ भोगिएकमनुलौं जगस्वाद । हरिपुरजातभयेप्रह्लाद ॥ लागेउ करन बिरोचन राज । जीति धरम सों अमर समाज ९४ ॥ पुनि सुरसकल क्रये छलभारे । बिप्ररूप बनि जाय पुकारे ॥ धरम निधान बिरोचन तबहीं । आदरदीन

जानिरिपुसबहीं ९५॥ मांगऊ द्विजगण इच्छाजोई। संशय रहित देव हमसोई॥ कपट बिप्रमुनि बोले बैन। प्राणहिं देऊ सत्यके ऐन ९६॥ सुनि सो सत्य बचन तजि दीन। तब बलिबालक रहेप्रवीन॥ भये बिरोचनके सुरहरषे। इन्द्रहि थापि सुमन बर बरषे ९७॥ इमि नृसिंहकी जन्म कथाहै। जामें हरिजन चरित कथाहै॥ वेदपुराण महान मथाहै। हरि सुमिरन बिन सकलब्रथा है ९८॥ जिमिजीवन जीवन लाजावन। तिमियह कथा चहिय नितपीवन॥ बिननिरखे हरिपद राजीवन। पारलहै किमि नर दुखसीवन ९९॥

दो० जो दयाल प्रहलादहित नरहरिभये मुकुन्द।
तिनकहंतजि चौरहिभजै क्योंरेमनमतिमन्द १००॥
माधवको प्रियमासहै माधव उज्जल पच्छ।
चौदशदिन भाषाकरी कृष्ण कथा यहस्वच्छ १०१॥
कथाकहत सुमिरत सुनत होत पापकी हानि।
उरमें थीनरहर बसत कृष्ण कृपाकी खानि १०२॥

सो० मुखमें नरहरि नांव गुणगिरिधर गुण रासिके।
गुरु गिरिधरके पांव हैं उर गिरिधर दासके १०३॥

इतिश्री गिरिधरदास बिरचितं नृसिंहकथामृतं समाप्तम्॥

———

अथ कच्छप कथामृत लिख्यते ॥

दोहा ॥

पदपंकज भगवानके षटपद वल्लभलाल ।
ममसुहृदय हृदमहं बसऊ सदासुजान कृपाल १ ॥

कवित्त ॥

भवसिंधु सिंधु जीवमन्दर महानगिरिकर्मबासुकी तहां लसै द्विजिह्व रच्छहै । ताकोमुख पापपुण्य पुच्छअतिसुच्छम है बासना दुबिध दैत्य देवता प्रतच्छ है ॥ सुधा सुख कान है समान दोऊ यूथन को गिरिधर दास तहां निज निज लच्छ है । बूड़त उधारन कौं शैल बरधारन कौं लच्छन ललाम नाम कच्छपको कच्छ है २ ॥

सो० कारनचहतयमचारु कछु कछु या भगवान को ।
करिहैं नन्दकुमार अपने चरित महान कौं ३ ॥

चौपाई ॥

एकबार मुनिवर दुर्बासा । चलेजात मगभा सतआसा ॥ देख्यो इन्द्रहि बैठो व्याल । डारी कंठ सुमन की माल ४ ॥ लैतेहि इन्द्र गर्ब अधिकाई । माल सुंडाल कंठ पहिराई ॥ ऐरावतउतारि तेहिताड़ीं । पदतें चूरकरी महिमाहीं ५ ॥ सो लखि सुमुनि श्राप यह दीनो । ऐमद मत्त होसि धन हीनो ॥ तातें सकल भये बिन कमला । रिपुन तबै जीत्यौ करि हमलाई ॥ होइइन्द्र सहसुरन उदास । गेपितु जनक जनक कै पास ॥ करि करिकै प्रणाम लैनामा । कही दसा निज दुखकी सामा ७ ॥

दो० बानी सुनत बिचारिकै कहत भये सुखचारि ।
सुनऊ देव यहि भेवको मैं नहिं सकत उचारि ८ ॥

छप्पय ॥

करन धरन वर भरन हरन सब जगत अचर चर । परम

धरम धर बरद दरद हर सरम करम घर ॥ तन मन मथ मन मथन अनघ अघ दहन अमर पर । हर अज नतपद कमल अमल जसरत मय नग धर ॥ दरशत सत भव भय नशत हरप लसत मन सकल जग । लख कल मखमरदन कपट हन दर धर जन अशरण शरण ९ ॥

दो० चलक पास करतार के कहिहैं सोई उपाय ।
विन उनके जग कोउ नहीं जो अब होइ सहाय १० ॥

छप्पय ॥

सत्य अविक्रिय आदि गुहाशय तर्क विहीना । निष्कल अनते परे भरे गुण प्रभु कालीना ॥ प्राण बुद्धि इन्द्रिय नर मत निंतर हित सुइनते । सब जुग प्रगट अशेष अगुण गुण गुणित गुणिनते ॥ भव अखिल चक्रव्यापक बरद जग कारण धारण करन । अज अति अनादि अरविन्द पद वासुदेव हमतुव शरन १२ ॥ एक वरण तम परे लोक जहं विल- सहिं योगी । योग गम्य योगीन्द्र धक्यो गुणगावत भोगी ॥ जाकी माया जगत मोहि लीनों सब भारी । अरिजित निर्जितअजित अजितपदलोकबिहारी ॥ हमशङ्करविधिअहि पति रमानहिं जानत जगदीश गति । हे हे मुकुन्द हमतव शरण शैल धरण सुख करन अति १३ ॥ ब्रह्मरूप जग भूप अखिल ब्रह्माण्डरूपधर । चरण धरणिशुण धरणि अहै तब भक्त हृदय घर ॥ कियेप्रकट दिकपाल करण लीलाबलास कर । महा विभुति स्वरूप पूत मति धूत पाप वर ॥ मन तुमरो सो मन छत्रपति द्विजपति औषधिपति परम । हे माधव हमसब तुव शरण धीरधनी धारण धरम १४ ॥ तुमरो मुख उतपाउ नाउ स्वाहा कर जोई । सब अन्तर आसीन अमर नर जीवन सोई ॥ नैन तुम्हारे सूर रहे जो पूरि जगत महं । नारायण विख्यात करत अरु हरत सृष्टिकहं । बरवायु प्राण तव प्राणपति सकल प्राण को जानवर । हे हरि परब्रह्म विभुति धर कृपाकरउ त्रैलोक पर १५ ॥ हे तुवनाभि अकाशप्रकट सबभूत निवासी । दिशाकरण वरण

हरण दुख आनंद रासी ॥ तव बल बासव प्रगट देव तुम्हरे पर सादन। बुधि विरञ्चि मन शंभु विश्व पूरण अह्लादन ॥ उरते पद्मा छाया पितर आगेतेप्रगव्यो धरम। तुव पीछेते अधरम भयो करउ कृपा केशव परम १६ ॥ विप्रवदनते प्रगट छत्रपति भये करनते। ऊरुतें प्रकटे वैश्य तुम्हारे शूद्रचरणते ॥ लोभ अधरते प्रगटअपर अंगन कामादिक। रोम रोम ब्रह्माण्ड विदित वेदन नरजादिक ॥ भुव अखिल लोक गण थोकके पालक घालक विशद मति। बर करउ कृपा कोदण्ड धर वासुदेव सब देवपति १७ ॥ अलख अमर पर प्रवर परा वर हरण मोहमद। करुणासिंधु दयालदीन के बंधु कृपाप्रद ॥ निर्गुण सगुण स्वरूप असुर अर्दन अनन्त अज। ध्यावतजाकहं नित्य न पावत पारशंभु अज ॥ जिमि वृक्ष मूल पानी दये हरित होत फल पच गन। तिमि तव सेवनते सकल सुरहोत अतिहि संतुष्टमन १८ ॥ दरशदेउ जगदीश दीन हित द्रवउ दयाला। हम सब तुम्हरे शरण करण शरणागत पाला ॥ मधुर वैन गुण ऐन जैन अरि नैन विशाला। महादेव विधि आदि देवके देव कृपाला ॥ जन दुखहि हरउ सुख विस्तरउ कृपा करउ दायकसरम। आनन्द कन्द गोविन्द हरि जयमुकुन्द धारण धरम १९ ॥

दो॰ इमि अस्तुति सुनि सुरन की सुर मर्दन गोपाल।
प्रगटे तिनके बीचमें नीरज नयन विशाल २० ॥

चौपाई ॥

भरत प्रकाशनतें सब आसा। जिमि उदये बहुभानिवासा ॥ तब विधि शंभु लख्यो हरिरूप। मरकत मणिसम अतिहि अनूप २१ कांचन वरण बसन वर धारे अमल कमल से दृग रत नारे ॥ कुण्डल मुकुट भरत दिसि जोती। लस घन मधं उड़गण समजोती २२ ॥ कौस्तुभ कण्ठरमा पुनि छाजति। हारकतार सुढार विराजति ॥ शंख चक्र आदिक वपु धारे। सेवहिं हरिहि पार्षद भारे ॥ २३ ॥

दो॰ सर्व सुरन सह सर्व विधि करि साष्टांग प्रणाम।

हाथ जोरि करते भए स्तुति अमल ललाम ॥ २४ ॥

मल्लिका छंद ॥

जन्म मृत्यु बर्जिताय । हर्षसिंध बेऽजिताय ॥ मोक्ष दायिने शुभाय । नौमि पाणि पंकजाय २५ ॥ वेद वेद्य बिग्रहाय । भक्त भाव संग्रहाय ॥ योगि वृन्द पूजिताय । नौमि शास्त्र कूजिताय २६ ॥ आदि मध्य शांत गाय । माधवाय केशवाय ॥ दीन दुःख मर्दनाय । नौम्यहं जनार्दनाय २७ ॥ विश्वविश्व कारणाय । विश्व भाव धारणाय ॥ दीन दुःख दारनाय । नौमि पाप हारणाय २८ ॥ निर्वि तर्क विग्रहार्य । शंकरार्क शक्रपाय ॥ नित्यकेलि तत्पराय । नौम्हहं परात्पराय २९ ॥ शंभु शेष बंदिताय । श्री हराज नन्दिताय ॥ नारदादि संस्तुताय । नौमि देव पाद्भुताय ३० ॥ विश्व धारिणे खजाय । पन्नगाशन ध्वजाय ॥ श्री मुखाब्जषट्पदाय । नौमिसं सुखप्रदाय ३१ ॥ देव दुःख नाशनाय । दिव्यपंक जासनाय ॥ कौस्तुभा भि भूषिताय । दूषणौरदूषिताय ३२ ॥ मंगलालु मंगलाय । चारु लोचना व्ययाय ॥ शंखचक्र राजिताय । नौम्यहं पराजिताय ३३॥ अण्डकोटि मण्डनाय । शोक वृन्द खण्डनाय ॥ कर्म कारणा मलाय । नौमि भक्त वत्सलाय ३४ ॥

दो० इमि अमरन की बिनय सुनि गुनिकै रमा निवास ।
बोलिबाणी मधुर अति करत मनोहर हास ॥ ३५ ॥

चौपाई ॥

हे हर हे विधि हे सुर भारे । सुनहु बचन मम निज हित धारे ॥ देश काल गुनि कीजै काज । जामें सुख पैये सहसाज ३६ ॥ करहु संधि तिनतें सुरनाथ । साम उचित प्रचण्ड अरिसाथ ॥ पूरब एक रह्यौ अहिकारा । बंदभयो सो बीच पिटारा ३७ ॥ बाहर देखि आखु हरषाने । तब तिनसों अहि बचन बखाने ॥ हमतुम मित्र होयंगे भाई । जन्म जन्म की मिटै लराई ३८ ॥ काठि पिटारा काढ़हु मोही । जानहु हमें मित्र नहिं द्रोही ॥ मूसन करि इक-

रार निसारा। तब तिनको अहि कीन्ह अहारा ॥ ३९ ॥ इमि रिपु प्रबल देखि मिलि जैये। समय पाइ तिहि हति जय पैये ॥ तिन तें मिलि कै मथहु नदी पति। तबहिं सुधा प्रगटै है अति मति ॥ ४० ॥

दो० सो हम तुमहिं पिआइ कै अमर करहिंगे एव।
तबतुम पैहो जीति कहं हरिहैं सकल अदेव ४१ ॥

सो० इमि कहि कृपानिधान अन्तर्ध्यान प्रभू भये।
तब निज निज स्थान गये संभु बिधि सुखमये ४२ ॥

चौपाई ॥

सुर सब बिन आयुध तेहिकाल। गे चलि जित बलि-दानव पाल ॥ लखिकै मिलि बैठायोराजा। पूछेउ हंसिकै आवनकाजा ४३ ॥ इन्द्रकहा हम तुम मिलिभाई। मथहिं सिन्धु सरितन करराई ॥ तातें अम्रत कढ़ैगो जबहीं। करि हैं पान तबहिं तेहि सबहीं ४४ ॥ ह्वै है अमर समरकहं करिहैं। सुखभरिहैं कोउ बीर न मरिहैं ॥ तब यह बात सबन मन भाई। मथहु सिन्धु सम्मति ठहराई ४५ ॥

दो० दैत्यन जान्यो प्रबल हम लैहैं सो सुखमारि।
चलेदोउ उनहिं कमकोउ निजनिजघातबिचारि ४६ ॥

चौपाई ॥

कारयो बिचार सबन अनुमानी। मन्दरगिरि की करहु मथानी ॥ तब सुर असुर सैल ढिगजाई। साहस करि लै चले उठाई ४७ ॥ मगमहं नगकै भार दराज। मरन लगे सुर असुर समाज ॥ सबन तबै कीनो हरि ध्यान। तिहि छण प्रगट भये भगवान ४८ ॥ मरे जिवाये नैनन हेरी। दीनबन्धुकरि कृपाबड़ेरी ॥ गिरिउठाइ करतें हंसिस्वामी। खगकै पंख धरयो खग गामी ४९ ॥ बायें पर सुर असुर समाज। दक्षिणपर परपर पर काज ॥ छण मैं लै तेहि उड़े खगेश। धरयौ सैल छीरो दधिदेश ५० ॥

दो० राखि भाषिकै मथहु इहि दीनबंधु भगवान।
बन्दित सब सुर असुरतें ह्वैगये अन्तरध्यान ५१ ॥

चौपाई॥

तबै बासुकिहि मंथन काज। कह्यौ जाइकै उभयसमाज॥ डोरीहोय नदीसमथीजे। प्रगटी बस्तु भागकहं लीजै ५२॥ सुनि बासुकी मोदसौं छायो। तिनके साथसिंधु ढिगआयो॥ नाइ शैलकहं सागरमाहीं। अहि लपेटि सुरअसुरतहांहीं ५३॥ लगे मथनकी करन उपाई। कसि कसि कटि हरषे समुदाई॥ हरिप्रेरित देवन मुखओर। गह्यौ सर्पकहं अति सहजोर ५४॥ तब असुरन भाष्यो सोहेरी। हम न पूछ गहिहैं अहिकेरी॥ अहै अंग कोमल यह अंग। तातें हम मुख गहैं उमंग ५५॥

दो० सब बिधि हम तुमतें बड़े नीति धर्म बलबंस।
तातें तुम पूछहि गहउमथहु सरित अवतंस ५६॥
इनिदेवन सों मानिकै हरि मततें तेहि काल।
पूछपकरि लागेमथन मुख दिसि असुरकराल ५७॥

चौपाई॥

मथहिं सिंधुभरि जोर अपाने। अहि मुखज्वाल असुर घबराने॥ तेहि छन तिनके मथत तहांहीं। मन्दरचल्यो समुन्दरमाहीं ५८॥ सो लखिदेव अदेवपुकारे। त्राहि त्राहि कुरु कृपा मुरारे॥ सो सुनिबाणी आरत तिनकी। शिवा शिवा तिथि जेठ असितकी ५९॥ कूर्मरूप धर्‌यौ भगवान। योजन लाख पीठ परमान॥ नीचेतें शैलहि उद्धार्‌यौ। उर्‌यौ देखि सबहिन सुख धार्‌यौ ६०॥ लागे मथन महोदधिभारे। सुधी सुधाकी आसाधारे॥ तेहि छन व्याकुल भे भट दोऊ। मथिन सकतभे सागर कोऊ ६१॥

दो० मेघ मंद बरषन लगे शीतल चली बतास।
मथि बहोरि थकतेभये पूरी सबन हरास ६२॥

सो० सहस भुजा कहं धारि प्रगटे तब सुरथांगधर।
चारि बदन त्रिपुरारि स्तुति बरणहिं बुद्धिबर ६३॥

चौपाई॥

मेघ बरण पीतांबर धारे। बिलुलित कच लोचन रत-

नारे ॥ पकरि दुइं दिशि सों अहिराजहि। मथत नदीश करण सुरकाजहि ६४ ॥ मथतमहो दधि अघ अकुलाहीं महा शब्द पूर्य्यो भुवमाहीं ॥ प्रगट्यौ प्रथम भरत दिशि ज्वाल। जहरलहर बाहर तेहिकाल ६५ ॥ लखिकै ताहि डर्य्यो चैलोक्य। भारी भयो सबन कहं शोक ॥ भरी व्योम लों ताकी ज्वाल। कांपे दिसन सहित दिशपाल ६६ ॥

दो० तब सब सुर मिलिकै गये लये बिरंचिहि साथ।
भवभवानि कहंनौमिकै कहतजोरि दोउहाथ ६७ ॥

प्रमाणिका छन्द ॥

नमामि शूल धारिणं। समस्त विश्व कारिणं ॥ शरण्य अंधकांतकं। कृपान्वितंकृतान्तकं ६८ ॥ सुबंधमोक्षरूपिणं। परात्पर स्वरूपिणं ॥ अशक्ति विश्व मण्डनं। कुताप पाप खण्डनं ६९ ॥ भवाभिभाव भावनं। सदा भवाति पावनं। भवानिका वरं वरं। भवं नमामि शंकरं ७० ॥ विराडनंत मक्षरं। जगत् स्वरूपिणं परं ॥ वरप्रदंशि वावरं। नतोस्मि सिद्धिदं हरं ७१ ॥ भवं भुजंग हारिणं। प्रभुं पिनाक धारिणं ॥ खलांधकांत कारिणं। नमामिदुःख हारिणं ७२ ॥ निरंजनं सदा शिवं। शिवा प्रियं सदा शिवं ॥ परंशशांक शेखरं। नमामि सर्वदा हरं ७३ ॥ त्रिलोक शोक मोचनं। निशा करार्क लोचनं ॥ महा तमीश्वरंचरं। भजो शुभंदयाकरं ७४ ॥ समस्त लोक रूपिणं। भवं भव स्वरूपिणं ॥ त्रिलोक पत्रि लोचनं। नमामि पाप मोचनं ७५ ॥ सुवेद वेद्य विग्रहं। कृपाकरं कृपागृहं ॥ मृडं सुरासुरैःस्तुतं। नतोस्मि शैलजान्वितं ७६ ॥ गुणादि कारणंवरं। वरेण्य मक्षयं परं ॥ हिमाद्रि कन्यका वरं। नमाम्य घाहरं हरं ७७ ॥ समस्त लोक पूजितं। स्तुतीति हासकूजितं ॥ सनन्दनादि वंदितं। नमामि नन्दि संयुतं ७८ ॥ श्मशान भूति धारिणं। श्मशान भू विहारिणं ॥ सदाश्मशान शायिनं। नमामि पुण्य दायिनं ७९ ॥ कपालवृन्दभूषणं। समस्तदुःखदूषणं। पिशाच वृन्दसेवितं। नमामिभूहितेरतं ८० ॥ निशाकरार्द्धशोभितं।

निशाकरप्रभान्वितं ॥ जनप्रमोददायकं । नमामिभूतनामकं
८१ ॥ द्विजिह्ववृन्दभूषितं । कुदूषणौरदूषितं ॥ समस्त भूप्रियं-
करं । नमामिदेव शंकरं ८२ ॥ सदा मुकुन्द संगिनं । मुकुन्द
पाद सेविनं ॥ मुकुन्दरूपिणं परं । नमाम्युमा वरंहरं ८३ ॥
दो० कृपा धरहु सब भव हरहु करहु हलाहलपान ।
नतरु जरतसंसार सबताकी ज्वाल महान ८४ ॥
चौपाई ॥
तब प्रसन्नह्वै उमानिवासा । देखि उमादिशि बचन नि-
कासा ॥ एसब सुर आये ममशरण । हम कहं चहिय अव-
सि हितकरण ८५ ॥ पियउं हलाहल ममसनकाना । पर
दुखहरण साधुकर बाना ॥ शरणागत पर करुणा करणी ।
परम धरम गाथा श्रुति बरणी ८६ ॥ सुनिकै गरलपानसम
कान । ह्वैहैं अतिप्रसन्न भगवान ॥ तातें कृपा सहित करि
मनकों । करिहौं दुखतें विमुखसबनकों ८७ ॥ इमिकहिदेव
उमा मतसाथ । ताकहं लेतभये निजहाथ ॥ देखतसबके तब
भगवान । करतेभये गरल करपान ८८ ॥
दो० नीलकण्ठ होतेभये नीलकण्ठ तेहिकाल ।
जनुकण्ठीधारणकरी वैष्णवके भूपाल ८९ ॥
सो० गिर्‍यो हाथतें जौन तौनपियौ अहिआदिकन ।
होतभये विषभौन ते अजहुं संसारमें ९० ॥
चौपाई ॥
बहुरि मथनलागे बलखानी । जगतमातुसुरभीप्रगटानी ॥
तेहि लीन्हों वटपीन तेहि काल । अग्निहोत्र हितमो दर-
साल ९१ ॥ उच्चैश्रवा कढ्यौ हयराज । तेहिबलि लियो अ-
सुर शिरताज ॥ ऐरावत वारन प्रगटाना । श्वेतअङ्ग गिरि
श्वेत समाना ९२ ॥ चारदन्त उत्तङ्ग अनूप । लियो इन्द्र तेहि
सुरमें भूप ॥ तबकौस्तुभ प्रगट्यौ मणि भारी । धारण ताहि
कियो गिरिधारी ९३ ॥ पारिजात पादपप्रगटाना । सुरपुर
रख्यो लख्यो भगवाना ॥ तब अप्सरा अमितप्रगटाई । स्वर्गी
हित तिन्ह स्वर्ग पठाई ९४ ॥ कम्बु अम्बु निधितें पुनिभयऊ ।

ताकहं कृपासिंधुहरिलियउ ॥ कटेउचापलिय आपमुरारी। पुनि ग्रशिभये जगत तमहारी ९५ ॥

दो० तब पदमा प्रगटतभई सुखमाहद गुण खानि।
दिशा प्रकाशन तेंभरत पंकज सोहत पानि ९६ ॥

चरणा दोहा ॥

तिनहि कनक सिंहासन दीन्हो इन्द्रदेव शिरताज।
रूपदेखिसुरनर मुनिमोहेरति अतिधारीलाज ९७ ॥

सो० सुर मुनिसिद्ध अनेक तिहि क्षण अतिहि विवेकसों।
करतभये अभिषेक पदमाको परमा मये ९८ ॥

हरिगीती छन्द ॥

करतेभये अभिषेक भरि परमाको तेहिछना। धरिरूप दारि सब कलश भरिलाई जलहि सुख धरिमना ॥ महि औषधी कहं आनि दीन प्रवीन महिमा जानिकै। सुमन सुसुमन लाये हरषि सबसाज मुंगल ठानिकै ९९ ॥ मुनि इन्द सहित अनन्द सुखमाकन्द अभिषेकहि करैं। गन्धर्ब गान बंधानबर सुरञ्छानमें सुरञ्छाभरैं ॥ आवज उपंगमृदङ्ग चंग सुबेणु बीन बजावहीं। पढ़ि वेद मंच अनेक भरि भरि कलश जल नहवावहीं १०० ॥ सागर दियो कौशेय पूरित धोयतेहि धारत भई। तबहार सुखद अपार उरमहं बर गिरा डारतभई ॥ दीनी बरुणतहं वैजयंती कमल कमला-सन दियो। अहि करन फूलहिं अपर भूषन बिश्वकर्मा तन दियो १०१ ॥

दो० इमि सबतें बन्दित रमा परमाभरीं ललाम।
तहं राजत ह्राजतभई हरि प्यारी गुणधाम १०२ ॥
तरवा लालरसाल पद कमल सरिस छविदेत।
जन विभितर ग्रस्तर दयो प्रगट ललाई हेत १०३ ॥
सुवरण बरण ललाम पद अंगुरिन पर नखसेत।
मनहुं पांचसर अमृत के मेरु पीठ छवि देत १०४
पगनूपुर सुखमा भरे रहे अतिहि छवि छाइ।
जनुसुर तरुमूलहि रही कनक लताल टाइ १०५ ॥

लहंगा बूटी लालको लसत छरित बर तौर।
रंभखंभ जुगपै मनहुं इन्द्रक पंचकी बौर १०६॥
कटि केहरिकटि मोहिनी किंकिनि छबिअभिराम।
मनुकटि नाजुक ना झुकै याहित बांधोदाम १०७॥
चलदलको दलअचल जिमि जमल अचलतौं खास।
तिमिहरिअबलाको उदरसे हतगिरिधरदास १०८॥
नाभि चारु सुखमा भरी बन्यो अनूपम तौर।
शोभा सागर उदर मधि मनहुं परोहैभौंर १०९॥
छबि सागर अम्भोज रंग सागर सुता उरोज।
धुर नायक हरि कुमुदको शुक्ल शशीसे रोज ११०॥
मोतिन का माला बनी उरहीं रन के हार।
नभगंगानखतनमिलो मानहुं करहिंबिहार १११
सुन्दर काठ कपोत में भूषन रतन उदोत।
मधि नायक के जोति तें मंद चन्द्र होत ११२॥
भुजा सिंधु सुकुमारिकी मणि धरके अनुहारि।
पंचबदनसोइ आंगुरी मणिनखहरिमनुहारि ११३
बाजू सोहत कनक को तिमि मजुंची छबि पूरि।
हेमनदीमधि में मनहुं रतन सेतु बिबिदूरि ११४॥
चारु बदन सुखमा सदन सुखमा धवको देत।
गिरिधरदास सशंकको चासु करत गतचेत ११५॥
शुकसी सोहै नासिका बेसरि केसरि कौन।
फैली जोति कपोल पैं लोल लसै अति तौन ११६॥
युगल आरसी पै मनहुं सुखलै मोती कीर।
बैठिरह्यौ चंचल बन्यो भ्रम प्रतिबिम्ब शरीर ११७॥
खंजन गंजन सोहते अंजन रंजित नैन।
कंजन के भंजन सदा रंगन रंजनऐन ११८॥
भौंह बीच टिकुली बनी शोभा कही न जाइ।
सुमनधनुषधनुपैंमनहुं सरफल चमकलखाइ ११९॥
सरपद रुपको हरत हैं कामजा जूके केश।
शीशफूल मधिमैंलसै घनमहं उदित दिनेश १२०॥

दो० करन मनोहर सोहते करनफूल युत चारु।
विविकविम्बमिटुझंचोर जिमि बैठेमोहनमारु १२१ ॥
कबरी सबरी फूलसों गुही बढ़ावैचाऊ।
नखतबांधिधरिपीठ मनु चल्यो चंदपैराऊ १२२ ॥
दीठिपहैं जब पीठिपैं नीठि मध्य दिखराय।
पियहियरस नारी मनहुं मेरुसिखर सरसाय १२३ ॥
सारीसारी मैं बनै भारी भारी काम।
भारी भारीगोखुरू मनहारी अभिराम १२४ ॥
अंगिया अति अनुपम बनी कारु चोब छवि धारि।
यनिमय छगकीछाल मनु बैठे ओढ़ि पुरारि १२५ ॥
वारन की गति वारिपै राजहंस को श्रासु।
ताकीगतिपैं श्रखहिं करिदेखत गिरिधरदासु १२६ ॥
कोकिल मोहै वचन पर रचन नाथ उरमोद।
मधुराई सब वारियै नेकहि वचन विनोद १२७ ॥
तनक देहद्युति देखिकै लगै कनक द्युति मन्द।
चारुचरनकतिभि पगधरत नूपुरभानक सुछन्द १२८ ॥
कहा कहीं लावण्यता धन्य कहैं सबलोग।
अन्यन जासौ जगत मैं पंचजन्य धरयोग १२९ ॥
जननीसकल जहान की तननी मोद बितान।
इमि नखसो शोभाभरीसोभित अदूं सुजान १३० ॥
सावित्री शचि शारदा उमानमितपद कंजु।
सुखसदमापद मानदापद मारामी मंजु १३१ ॥
ललित लच्छमीको सुचै नखसिख सुकुर विलास।
श्रवण करहिंतिनकेघरहिं भवनलछमी वास १३२ ॥
रमारमण रंजनदोऊ कृपाकरऊ शुचिखास।
समादीनपै चाहिये बरसतगिरिधरदास १३३ ॥
सो० तेहिचण रमा सुजान गुण अवगुण तित सबनको।
देखति बुद्धिनिधान सबतें बरवर बरनको १३४ ॥

चौपाई ॥

कहुं तप यतिपै कोप अपार। कहुंकाम कहुंलोभ प्रचार॥

काऊं विभूति अतिशय सुखदाई । देखोपै परतंत्र सदाई १३५ ॥
काऊं सब सिद्धि अमंगलरूप । काऊं मोघ सुख अमित अनूप ॥
इमि सबमें अवगुणपरचार । लखतचलीं इंदिराउदार १३६ ॥
दो० तब अनन्त गुण हरिहि लखि अवगुण गणसों हीन ।
समसों बरिबर कंठमें माला दीन नवीन १३७ ॥

चौपाई ॥

तेहि क्षण व्याह रमाको राच्यो । देवन में अति मंगल माच्यो । ॥ ब्रह्मा शंकरादि सबआये । वर्षहिं कुसुम महा मुद छाये १३८ ॥ वेदपढ़ें द्विज बुद्धि निवासी । जयजय रमारमण अविनासी ॥ सुर सुन्दरी करहिं कल गान । सोहत मंगल कलश बितान १३९ ॥ शङ्ख मृदङ्ग बजैं बहु बाजा । वर्षहिं कुसुम दूब दधि लाजा । पंचरत्नके चौकपुराये ॥ कनक कलश भरि वारि धराये १४० ॥ दीपमालिका जगमग होती । बर बितान झालर में मोती ॥ पल्लव पांच परम रुचिकारी । मङ्गलसाज सबै छबिधारी १४१ ॥
दो० कमलनैन कमला तबै बिधिवत पूजिगणेश ।
अग्निप्रदक्षिणकोकियो व्याह समय तेहिदेश १४२ ॥
सुता दान सागर दियो भरेमोद मुदभूरि ।
जयधुनि शुभधुनि स्वस्तिधुनि रहीजगतमें पूरि १४३ ॥

हरिगीती ॥

धुनिपूरि सबजगरही जयजय परम छबि तेहि थलबढ़ी । सिरमौर सुर सिरमौर को लखि हर अजन अस्तुति पढ़ी ॥ यह इंदिराको व्याह जे भरिचाह मानव गावहीं । हरिकी कृपा धनधान्यते हरिभक्ति अविचल पावहीं १४४ ॥
दो० व्याह रमाको इमि भयो बसीं विष्णु उरजाय ।
जगको दुखदारिद गयो पदमा दर्शनपाइ १४५ ॥
सो० मथनलगे पुनिचाहि निकसी देवी वारुणी ।
असुरन लीनीताहि हरि मरजीतें आसुतहं १४६ ॥
दो० जल अन्तरतें तबकढ़े धन्वन्तरि भगवान ।
करकलसा पीयूषको चारु मयूष निधान १४७ ॥

चौपाई ॥

तेहिक्षण असुर कलश लैभागे। सुर व्याकुल सुख जीवन त्यागे ॥ प्रथम करहिं हम अमृत पानहिं। इमि आपुसमहं दनुज बखानहिं १४८ ॥ जब अज्ञान इहि विधि रण ठाना। सुधा न मिलिहै देवनजाना ॥ परमउदास निरास विचारे। इन्द्रादिक अमरादिक सारे ॥ १४९ व्याकुल महा शोक सों खरे। चिन्तायुक्त क्षोभमें भरे ॥ तब नारायण कृपानिधान। भक्तहेत भे अन्तर्ध्यान १५० ॥

दो० इतनेई महं बाम बनि अंग अंग अभिराम।
आये सब मन मोहते श्याम मोहनी नाम १५१ ॥
हरिहि देखि मोहे असुर बढ्यौ प्रेम उर भूरि।
भई कामकी आतुरी गई चातुरी दूरि १५२ ॥

चौपाई ॥

पूछनलगे नाम अरुठामा। कहहु कहांतें आईरामा ॥ सुरीआसुरी कौतुम अहहू। नगीपन्नगी कौसोकहहू १५३ ॥ ऐसी रूपवती जगमाहीं। हमतिय दूजी देखो नाहीं ॥ सौविधि सौविधि करहिं उपाई। तौ तुमसो नहिं सकहिं बनाई १५४ ॥ हमसबको सुभाग अब जागे। तुवपग आवत संकट भागे ॥ करिकै कृपाकरहु इककाज। कढ्यौ सिंधुतें अमृत आज १५५ ॥

दो० ताहि पिवावहु सबनकों करि विभाग मतिपीन।
हम अबतुव आधीनहैं कृपाकरहु गुनिदीन १५६ ॥
सो० सुनि असुरन की बात जगत तात परमामये।
मन्दमन्द मुसिक्यात मोद कन्द बोलत भये १५७ ॥

चौपाई ॥

हमचञ्चल सुभावहैं बाम। मोहिन देहु सुधा गुणधाम ॥ कैसिउनारि होइजगमाहीं। पैविश्वास योगहैनाहीं १५८ ॥ जोहम सुधा हरैं छल करिकै। तब काकरिहौ उर दुख धरिकै ॥ सुनिकै बोले मन्द सुरारी। कामबिबस एकहि मति धारी १५९ ॥ हम सब तुमरे बस हैं भामिनि। जो

करिहैा कबूल सोइ खामिनि ॥ तब मुकुन्द सुर इन्दबिना-शन । बोले करत मनोहर हांसन १६० ॥ करिश्नानध्यान काहं धरहु । तब सब पान सुधाकर करहु ॥ सुनितेगये करन अश्नाना । इत देवनसों विष्णु बखाना १६१ ॥ बैठहु करि कतार तुमश्रासु। पियहुसुधा उरपूरि हुलासु॥ सुनिते सकल लसे करि पंगति। चौगुन बढ़ी बदनकी रङ्गति १६२ ॥ कर को कलस श्याम सुदपागे । देवन सुधा पियावनलागे ॥ तेहि छण राहु भेव गुनि हाली । बिबुध खरूप धर्यौ बुधि आली १६३ ॥ शशि सूरन मैं बैठोजाई । तिन तब हरि सों सैन बताई ॥ पिवत चक्र मार्यौ भगवान । धरसिर भिन्न भये सहप्रान १६४

दे।० इमि सब सुरन पिवाइकै अमृत सुर सिरताज ।
अन्तरहित होतेभये करि भक्तन कोकाज १६५ ॥

चैापाई ॥

हरि मोहनी खरूपहि धारा । सो सुनि पायो शंभु उदारा ॥ दर्शन करन हेत छबि छाये । हरिके धामकाम रिपु आये १६६ ॥ सवैया ॥

गज खाल विशाल बनी तनमें मनुघेरि रही हिम शैल घटा । गिरिधारण धारण चन्द किये द्युतिदेखतहीं तमदूरि हटा ॥ बहुरङ्ग प्रसूनन गुंथीलसै सिर गङ्गतरंग समेतजटा । बगपंगति शक्र शरासन सों मनु शोभित सुंदर बिज्जु छटा १६७ ॥ सांपके कुण्डल शीश त्रिपुण्ड खबीस के झुण्ड चलें इपतें हटि । ध्यान हृदय गिरिधारण को अघ श्रैागुण देखतजाहिं भटैनटि ॥ शैलसुता अरधंग लसै अङ्ग अंगन तें रति जातिश्रहै घटि । मुण्डको माल भुशुण्डकी खाल भुशुण्ड के मुण्डकी जालनी कटि १६८ ॥

छप्पय ॥

षटमुख गजमुख बीरभद्र नन्दीभृङ्गी पुनि । धनपति घंटा नादपार्श्वमैालीनारदमुनि ॥ नलकूबर मणिग्रीव चंडमंडीश महाबल । सनक सनंदन देवराज बलि सुत समेत दल ॥

सुरलोकपाल दिगपाल सब शूलपाणिके सङ्गबने। जय उमा रमण भवभय हरण जयजय हर बरणहिं घने १६९॥ भैरव भूतपिशाच प्रेत उन्माद बिताला। शाकिनि डाकिनि प्रमथ ब्रह्म राक्षस रिपुकाला॥ कूष्माण्ड गन्धर्व महामारी बड़ व्याला। बालपूतना दुष्टसंखिनी यक्षकराला॥ दितिअदिति सुवननिधि दिवस चर मुनि महर्षिपर मामये। संग महादेव के होय कै देव देव हरिपैं गये १७१॥
दो० करिप्रणाम बोलत भये त्रिपुरनाशकर आसु।
धस्यौरूप जो नारिको दरशनदीजै तासु १७१॥
सो० प्रभु यह मेरो नेम सबप्रभुको दरशन करऊ।
सोईगौसुनिप्रेम जासैं अति आनन्द धरऊ १७२॥

चौपाई॥

सो सुनिहंसे भक्तभयहारी। बोले वचन रचनसुदभारी। यहस्वरूप कामिनकेहेत। है हमधस्यौ सुनऊहपकेत१७३॥ तुम से जोगिन कों यह दर्शन। उचित न चित सबुझाऊ अघमर्षन॥ सोसुनिकै पुनि शंभु उचारो। तुवप्रताप हम कामहिं जारो १७४॥ करिकै कृपा दिखाइय रूप। जिमि हत हत्यहोउ सुरभूप॥ तबसब जगपति खगपति गामी। अन्तरहितभे अन्तरयामी १७५॥
दो० घरी इक बीती तबै सन्मुखतें इकबाम। गेंद खेलती हरतखो अंगअंग अभिराम १७६॥

सवैया॥

पायल पाय जसैं अतिही द्युति देखत घायलही करि डारै। सोहतिहै रसना गिरिधारन भाषनको रसनामति हारै॥ हीरनके हिय हार सुढार निहारत बिश्व अंधार पधारै। कुन्दन कुन्दकरैरद इन्द सुकुन्दन कुन्द प्रभा करि डारै १७७॥ आननइंदुमैं नासिकाचारु लजावतिहै सुखमा सुक चंचुकी। मंद महा मुसुकान फवीगिरि धारनकारण काम प्रपंचकी॥ अंग सुगन्ध कहा कहिये समतानहिं

केसरह्न करै रंबुकी। कंचन कुंभन से कुचपैं करी कांति मई चमकै शुचि कंबुकी १७८॥

दे० कामदेव की कामिनी बामदेव की बाम।
सुरपतिपतिनी आदिलै बारियनारि सुदाम १७९॥

चौपाई॥

शीतल पवन आइ तित चंचल। आसु उठाइ गिरायो अंचल। लखतचले अति आतुर मनबनि॥ मदनकदन मद मदन सदनबनि १८०॥ आगे रूप जात वनिनारी। पाछे गहन हेतुकामारी॥ सुनऊ सुलोचनियात हमारी। फिरऊ नेक इमि कहत पुकारी १८१॥ बिथुरी जटाचलीं बहि गंगा। परम प्रखेद भस्यौ हरअंगा। युवति बिभूतिलखै सब दुनियां। शरद जलद मनु तजत लघुनियां १८२ गिरैवसत बिषतन के ब्याल। कटितें छूटिपरी गजखाल॥ टूटीमाल गिरैं शिरकैसे। गिरैंताल फल तरु तें जैसे १८३॥

दे० खेत खेतकी रेतमें रेतगिरत छबिदेत।
राजततरुवरपतमनऊंबऊमोती फलखेत १८४॥
गिरतजात जहंजहं धरणिबिंदु भस्यो अतिज्योति।
पारा कनकादिकनुकीखानितहांतहंहोति १८५॥

चौपाई॥

सो छबि देखि उमा मुसुकानी। बोली बिहंसि भवानी बानी॥ कहाभयो यह तुमहिं गोसांई। धावत कामातुर की नाईं॥ १८६॥ षट मुख गज मुख तुमरे छोरे। देखऊ मौन गहे मन मोरे॥ मैंतुव तिय सकोचतें छाई। तऊ कहति लखि नाथ दगाई १८७॥ गण समूह देखहिं टक लाये। कहि नसकहिं कछु अचरज छाये॥ जेते देव अदेव सुनीश। आये लखन यान चढ़ि ईश १८८॥

दे० तेसब निरखि बिचारि गति भये चित्रअनुहारि।
कहा होयगो यासमय मोसोंहरहिमुरारि १९०॥

चौपाई॥

जापर होइ इनहिं की दाया। ताही कों नहिं ब्यापै

माया॥ नहिंनागरियह गर्वप्रहारी। धरिसमाधि देखऊ त्रिपुरारी १९१॥

दो० इही मोहनी रूपहैं मोहन मोहन चित्त।
दरशदियो तुम्हरे कहे जिनहिं जपतहौ नित्त १९२॥
इहिविधान भाषति उमा विह्वल धावत ईश।
सुधिबुधि गत संभ्रमभरे जानिमिले जगदीश १९३॥

दो० उरलावत निजरूप धास्यौ श्याम अनूपहद।
निरखि भूतकेभूप सलज कहतगहिपद्मपद १९४॥

मौक्तिकदामछन्द॥

कृपाकरियेजगदीश मुकुन्द। मनोहरमूरतिनाशनद्वन्द॥ प्रभो परमेश्वरकालियकाल। कृपालयपालय माश्रनपाल। १९५॥ कियो हमजो मनमें अभिमान। हस्यौ तिहि आप अनंद निधान॥ रमापतये परमा धरणाय। नमो हरय कलुषा हरणाय १९६॥ विरञ्चि रमाहम आदि सदाहिं। चलै तुम्हरे बसया जगमाहिं॥ सुतस्थभवाम्बुनिधावमरेश। हरि:शरणं ममविश्वरमेश १९७॥ दह्यौहमकामकह्यौहम कौंन। लह्योफलतासु बह्यौमदतौन॥ खगध्वजकेशव दानव काल। दयांकुरुभो भगवन् ब्रजपाल १९८॥ करौजगआपु भरौ पुनिआपु। हरौपुनि आपुनि शक्ति प्रतापु॥ सुदर्शन हस्तसुदर्शन रूप। कृपांकुरुकेशव भूतनभूप १९९॥ बिना तुम्हरी करुणाकरतार। नजानिसकेकाउ भेदअपार॥ सरोरुहलोचल रोचन रूप। प्रसीद परेश्वर निर्जर भूप २००॥ सदा मोहि जानि अपानोइ दास। कृपा करियै बर बुद्धि निवास॥ मुकुन्दविभोव्रजवल्लभ सत्त। दयांकुरुभोदरहस्त गुणज्ञ २०१॥ तुम्हैंतजिऔरहि ध्यावहिं जौन। इथानिज जन्मगवाहिंतौन॥ नमो हरयेयदुवंशवराय। नमःसुखदाय नमः सुरपाय २०२॥

दो० तुवमायाबश अतिहि प्रभु मोहिमोह्यौ इहिकाल।
तातें अबकीजै कृपा पुनिनहोइ यहहाल २०३॥

चौपाई॥

सुनिकै हंसिबोले जगस्वामी। हमतौ प्रथम कह्यौ द्रुप गामी॥ जगमहं जेतेहैं तनुधारी। सबपर प्रबल कामका मारी २०४॥ तुमतौ दह्यौ कामकहंछनमें। यह फल गर्ब कियो जो मनमें॥ जाऊआसुतें हमरीदाया। तुम पैं कबहूंन व्यापियमाया २०५॥ सोसुनिकरि प्रणाम सुदछाये। उमासहित कैलासहि आये॥ तहांबैठ सबमैं व्रतधारी। पुनिपुनि इहइ कहहिं त्रिपुरारी॥२०६॥ परमभक्तवत्सल जगमाहीं। हैकोउ केशवके समनाहीं॥ सबपर प्रबलश्याम की माया। जो निकसै सो उनकी दाया २०७॥

दो० हरिको अरु हरिजनन को शुद्धचित्त सों मोरि।
बारम्बार प्रणामहै कहत यह्योरि वहोरि २०८॥

सो० इहिबिधान भगवान धस्यौ मोहनी रूपकहं।
सो।ध्यौशंभुसुजान मुनि प्रधान जोजगतमहं २०९॥

चौपाई॥

काटि राऊ सिर जब जगदीश। अन्तर्ध्यान भये सुर ईश॥ धर सिर सुधा प्रभाउ समान। तिहिछण उठे महा बलवान २१०॥ पूरब बैर रह्यौ उर छाये। पुनिशशिसूर शशिन कटवाये॥ औरऊ सतगुण रिसि उरबढ़ी। तित लोकी जनु नीवहिचढ़ी२११॥ अमरहोयकै समर रचाये। रवि शशिसों अति द्वन्दमचाये॥ दनुजभयेसब इनके संगी। तिनकेसंग अमर रणरंगी २१२॥ छलीदेव अरु देवप्रधान। इमि कहिकहि ते लरहिं अजान॥ परमभयंकर विक्रमधारी। राऊ केतु नहिं पावहिं हारी २१३॥

दो० तब बिधि तिनसों आयकै कहतभये यह गाथ।
तुमहिं अमर पदवीभई अब न लरऊ इनसाथ २१४॥

चौपाई॥

पूजनीय हौहौजगकेरे। लहिहौ भाग संगमहंमेरे॥ ताते देऊबैर बिसराई। करऊन इनकेसंग लराई२१५॥ राऊकेतु तब बोले ऐसे। शशि सूरनसों लरहिं न कैसे॥ इनदोउन

ममग्रोग्र कटायो । सुनिपुनिगुनि विधि वचनसुनायो२१६॥ पर्व्व परंपर परिदिहैछाया । वैरबुनिरि तब ग्रसेऊ चदाया ॥ इमि कहिकै यह पदवी दीनी । दुऊंकी सदा वक्र गति कीनी २१७ ॥ चक्रहि तबै कह्यो भगवान । होयऊ ग्रसत दुहुन के मान ॥ बलधर केतु राहु अरु केतु । सुरसंग वैर तज्या इहि हेतु २१८ ॥

दो० तबै तहां होतो भयो देवा सुर संग्राम ।
सकलसमर मेंअगऊं कविबरणहिं जाकोनाम २१६॥

चौपाई ॥

तिहिछन महाअसुरकी सैना । चलीहरन छितविक्रम ऐना ॥ को अस सुकवि अहै महि धरणी । ताके सकै बरण को बरणी २२० ॥ नाना बिधि फरहरैं पताके । गिरहिं सुकुट जिनकी छिधि ताके ॥ कलसे लसे कनक के नाना । छुइ छुइ द्युति निधान असमाना २२१ ॥

हरिगीती छन्द ॥

असमान छुइ छुइ लसे कलसे बिबिधि बरण सुहावने । जगमगत नग जिन महं अमित सबनग अंधार नसावने । सित छत्र शोभा देहिं नभलखि चकित सब मन होतहैं । जग बीच सुनियत एक शशि इत बहुत ब्योम उदोत हैं २२२ ॥ मणि जटित डांडी चारुचामीकरनकी दुति धरण हैं । गजराज मोतिन भालरैं शोभित धरातम हरण हैं ॥ बहु केतुदन्त मधि छबिभरे जिन जोहते मन मोहते । पन्ना पिरोजा नील मणि मानिक जिन्हन महं सोहते २२३ ॥ बरबात सों फहरात पट दरशात सुन्दर महतहैं । मनुथाह जै असमानकी बसहै इतो यह कहतहैं ॥ शुकमोर चातक हंस हय गज आदिसों अंकित बने । नवकारचोबी काम लसहिं ललाम द्युति आकर घने २२४ ॥ तिमि सुरथके समुदाय सोहहिं बिबिधि बीर बिराजते । नाना बरण हय वायु जव भूषित सुजिनमहं छाजते ॥ छतरीभरी अति कांति सों नगपांति सों परमाधरै । कहु रंग रतन बिहंग

तिनपर छवि सबमको मनहरे २२५ ॥ मजबूत बैठे सूतरन बैगति भूत जिनपर दरशते । संग्राम काम लगाम हाथ लगाम जै अति उरसते ॥ बर चक्र चार छुढार रविमणि सरिस तिन महं राजते । घण्टा घनेघन बाजते सुनि सो घनेघन लाजते २२६ ॥ तिमिशुण्ड अमित बितुण्डके निज शुण्डकों उन्नत करे । घनरङ्ग अङ्ग उतङ्ग सङ्ग उमङ्ग सङ्गर के अरे ॥ निज कुम्भसों घनयूथ टारहिं शीश मायिक के बने । शिङ्गार करन महं कनकके बर बनकके फेरहिं घने २२७ ॥ मखतूल निर्मित झूल उर बहुहार शोभा छावते । गजबाण बै अंकुश जलधरबि बिज्जुसे चमकावते ॥ हौदे अमारी बहुत भारीदाम के तिनपर लसै । रणधीर बीर सुजान जिन्हपर समरहित सुदभरि हंसै २२८ ॥ तिमि तुरङ्ग जगमग चलहिं नाचत मनहुंते बढ़िगति धरे । सिरलगी कलगी रतन की उर हारही रणकेपरे ॥ कैकन गलेमहं सोहनी द्युति धर घनी जगमोहनी । बरपीन ग्रीन नवीन चमकैं घनी जिनके अधिकनी २२९ ॥ इक एक पूछी बीच पूछी धनद की दरशातिहै । दुमचीर चीन निकार बहुमणि सों खंची सरसातिहै ॥ जिनपैं चढ़े असवार आयुध हाथ में चमकावते । करबै लगाम कलाम अति अभिराम अश्व नचावते २३० ॥ तैसे सिपाही बीर रणचाही सबै सुखमा भरे । बर बसन भूषण कवच कांचन के मनोहर तनधरे ॥ कटिकसे रणहित चले गर्जहिं बिबिधि भट रससोंसने । टेढ़ी बनी सिरपाग पूरितभाग अनुपम अनगने २३१ ॥ असिचर्म असनी शूलशक्ति नराच धनु तब गिरि गदा । बंदूक चक्र छुरी परश्वध अस्त्र धरि भरि भरि सदा ॥ गरजैं गरारे समर मतवारे अरेमद झूमते । बलधैन बोलहिं बैन धरधर नैन सबके घूमते २३२ ॥ दुन्दुभि दमामा तुरही भरपूर बाजन बाजते । सुनि घोर सो घनघोर अंबुद प्रलयह्के लाजते ॥ कड़खैत बैठे तुरङ्गपर रणगीत बहुबिधि गावते । सबके हृदय महं समर को अह-लाद खाद बढ़ावते २३३ ॥ इमिचलत दानव सैनके खल

चलत सुर चतुरङ्गिणी। थरकरत महि उच्छरत नद राज सकल तरङ्गिनी ॥ अकुलात कच्छप कोल अहि गिरिगिरत अवनी आइकै। नभ धूरि पूरी भूरि रबि शशि दूर दूर दराइकै २३४ ॥

दो० इहिबिधान चलती भई दानव सेना घोर।
सहित महा सहजोर के देव सैनकीओर २३५ ॥

चौपाई ॥

गज रथ तुरङ्ग ऊंट बनचारी। वृषभ मेष म्टग सूष बिलारी ॥ ससक सिंह अहि अजगर भैंसे। चले अमित भट इन पर बैसे २३६ ॥ हंस बाज पिक मधुरालापी। कीर कपोत कुलंग कलापी। गीध उलूक काकपिक गौरा। इन चढ़िचले कितेक करिदौरा २३७ ॥ मच्छ कच्छ मंडुक घरियार। सूंस मगर जल कुक्कुट स्यार ॥ तरु गिरि यान पालकी चढ़िचढ़ि ॥ चले अमित रिन मढ़ि मढ़ि बढ़ि बढ़ि २३८ ॥ नानाबिधि बाहन असवार। नाना बरण असुर सरदार ॥ नाना अस्त्र शस्त्र करधारे। नानाविधि गरजहिं बिकरारे २३९ ॥ इहि बिधान समरयमों पूरे। असुरचले संगरकों रूरे ॥ सुधापान सों अति खिसियाने। बलकत चले रणहिं रिसियाने २४० ॥

दो० वैहायस नामक सुरथ मणि मयमय कतचारु।
चढ़िचलांक चलते भये बलिदानव भरतारु २४१ ॥

चौपाई ॥

बंदी मागध सूत सुजाना। वर्णन करहिं सुयश विधि नाना ॥ बलि समान दानी जगमाहीं। भयो नहै अरु ह्वैहै नाहीं २४२ ॥ देततिन्है मनवांछित भाजा। रणमानी दानी निरताना ॥ कनक रत्न धन बरसत कैसे। भादव बारि बलाहक जैसे २४३ ॥ चहुंदिशि दुरहिं चंवर चलचारू। सनमुख बाजे बाजहिं मारू ॥ सुरछल अमित फिरावहिं दानव। परिणिसकै छबि को अस मानव २४४ ॥ पंखे परम रुचिर दरशावैं। चारहु दिशि लै असुर डोलावैं ॥ डांढ़ी कनकमयी छबिभरी। अमित अमोल जवाहिर जरी २४५ ॥

सुरजमुखी मनोहर नाना । जिन शोहत मोहत दिन-मानी ॥ शीश छत्र सितमण्डल सोहै । वारन मणिआभरनि जासो है २४६ ॥

दो० सोपदार सोहैं अमित ओपदार अभिराम ।
जयजय ध्वनि बोलत चलहिं जयके योग सुदाम २४७ ॥
इमि अपार अंभोधिसी असुर ईशकी सैन ।
चलीभलीविधिबिभिन्हिचलतहलीधराँखगतचैन २४८ ॥

चौपाई ॥

चले संग में असुर समाजा । इक इक अमित कोटि के राजा ॥ हेति प्रहेति निशुंभ सुमाली । शुंभ पाक नमुची बलमाली २४९ ॥ बान विरोचन जंभ सुजान । तारक उत-कल कपिल महान ॥ इल्वल विप्र चित्तमय वीर । कालनाभ सुमयो सुख धीर २५० ॥ हिशिर शंकुशिर शकुनी नाम । बज्रदंत संबर बलधाम ॥ हयग्रीव चक्रोत्म योधा । चलेउ भूत संताप सक्रोधा २५१ ॥ असुर अरिष्ट अरिष्ट समान । बहुरि अरिष्टनेमि बलवान ॥ मेघदुंदुभी सूर शिरोमणि । इनहिं आदिभट चले कोपसनि २५२ ॥

दो० बरणि बात कवआदि सब पै।लोमकके यूह ।
प्रबल चले कालेयगण जीतन अमर समूह २५३ ॥

तोटक ॥

इमिदानव के गण धावतभे । सबही बाढ़ शङ्ख बजावत भे ॥ रिपुसैन सजी लखिकोप भये । सुरराज मतंग सवार भये २५४ ॥ सित शैल समान महान लसै । कवि शोभरि जीतन आसनसै ॥ मदधार अपार चुवै धरणी । मग कुंभन के निकरैं तरणी २५५ ॥ गजगाह परी गजसोतिन की । इक एक निशाकर ज्योतिनकी । उरओलि बिराजनि घंटनकी । गजहै कलहै घुंघुरू गणकी २५६ ॥ छबि कुञ्जर की सुकहा कहिये । मघवायुत देखतही रहिये ॥ अमि मोहत हीरन हारनहै । तेहि वारनपै जगवारनहै २५७ ॥ सिरमें मणिको रजनी मणिहै । सोइकांतिभरी ध्वजनीमणि है ॥ संगशोभित

है सुरकी ध्वजनी। दिनकोंसुकिये रजनींरजनी २५८॥ सुर केदलकी बरजोछविहै। तिहिभाविसकै असकोकविहै॥ यम आदिकवीर चलेबढ़िकै। अपने अपने रथपैचढ़िकै२५९॥ हम जीतहिंगे मन सैं गुनिकै। धरु मारु प्रहारुदुही ध्वनिकै॥ सुर दैत्यन सों तिहि काल भयो। रण दारुण विक्रम तेज भयो २६०॥

दो॰ बाजन लागीं दुन्दुभी भेरी पटह निसान।
समरअमरुअरु असुरसों होनलग्यो घमसान २६१॥

चौपाई॥

उभय सुभट बढ़ि जूटन लागे। रिपु तन गहि गहि कूटन लागे॥ पगकर उर उर टूटनलागे। गीध स्यार मिलि लूटन लागे २६२॥ सिर बहुतन के फूटन लागे। रुधिर फुहारे छूटन लागे॥ बीरबीर रसबरसन लागे। कंकआंत गहि करषनलागे २६३॥ सूरपरस्पर परसन लागे। समर विजयहित हरसनलागे॥ दौरि दौरि भिरि भरसनलागे। छिते सछत तन दरसन लागे २६४॥ विविधि भांति रण राचन लागे। अस्त्र शस्त्र गति जांचन लागे॥ धरु धरु मारु पुकारन लागे। आयुध अमित प्रहारनलागे॥ परम कोलाहल मांचन लागे। तपे बीर रिसि आंचन लागे २६५॥ बहु भट गिरे नराचन लागे। बहुकबन्ध ह्वै नाचनलागे॥ धरुधरुमारुपुकारनलागे आयुधअमितप्रहारनलागे २६६॥ तकि तकिकै शर मारन लागे। अरि शिर काटि पवारन लागे॥ भल्ल परस्पर डारन लागे। झपटिझपटि उरदारन लागे २६७॥ कादर डरि डरि भागन लागे। सूर समर अनुरागन लागे॥ बली बीर रस पागन लागे। बचन आंच अरि दागनलागे २६८॥ सुरथ सुरथसों लागनलागे रथी शूल असि त्यागनलागे॥ हय हय द्वन्दमचावन लागे। गज गज बढ़ि रण चावन लागे २६९॥ बहु भट अस्त्र नचावन लागे। समर मत्त बनि धावनलागे॥ बहुतनके उर फांटन लागे। ते मन जीव उचाटन लागे॥ सूर सूर गतिपावन

लागे। मरि सुर धाम सिधावन लागे २७० ॥ अंग अरिन के काटनलागे। काटि काटि अरिपाटन लागे ॥ बहुतन के उर फाटन लागे। ते गन जीव उचाटन लागे २७१ ॥ भट दानी विधि ठाटन लागे। बाण दक्षिणा बांटन लागे ॥ कर कमान गहि फेरनलागे। नाम भाषि रिपु टेरनलागे २७२ ॥ लगे बाण बहु हेरन लागे। सनमुख नैनतरेरनलागे ॥ आयुध छन्दवरे बरनलागे। सिमिटि सिमिटि घिरि घेरनलागे २७३ ॥ करसन कठिन शरासनलागे। प्रणकरि शत्रु बिनाशन लागे ॥ दपटिदपटि कैचासनलागे। दलअधिधसिकैकरसन लागे २७४ सूर सूर से भासन लागे। कोप किरिणि परकाशन लागे ॥ पंचाननसे गरजनलागे। बहुत तरपिकै तरजनलागे २७५ ॥ केते लखि लखि लरजनलागे। भयतें प्राण बिसरजन लागे ॥ कायर बहुतनबर्जन लागे। भरसन तिनहिंअपरजन लागे ॥ २७६ दौरि दरेरि दपट्टनलागे। भेरत भेरि झपट्टन लागे ॥ धीरधीर धरि दट्टनलागे। शोणित पंक रपट्टनलागे २७७ ॥ मल्ल समान लपट्टन लागे। समरनट्ट से नट्टन लागे ॥ किते जलदसे गाजनलागे। छबिसों दलमधि छाजनलागे २७८ ॥ बहु सुर पुर पर राजन लागे। सो लखि कादर लाजन लागे ॥ बाजन सगरे बाजन लागे। भट उर आनंद साजन लागे २७९ ॥ आयुध अमल खरक्कन लागे। कर सन सरप सरक्कन लागे ॥ कोटिन केतु फरक्कन लागे। अखिलरिपु हृदय दरक्कन लागे २८० ॥ एक एक कहं तक्कन लागे। अब न बचत यह बक्कन लागे ॥ परखि परखि रिपु खण्डन लागे। सुयश भटन मैं मण्डन लागे २८१ ॥ टंकारन को दण्डन लागे। कंपावन नव खण्डनलागे ॥ परन नृपति ज्यों दण्डन लागे। बहु दलप्रविशि विहण्डन लागे ॥ २८२ ॥

दो॰ इहि विधान माच्यो तहां संगर घोर अपार।
पृथक् पृथक् असको सुकविबरणैकरि निरधार२८३ ॥

चौपाई ॥

कढ़ी रुधिर सरिता अतिभारी। परम भयावनि धारण

भारी ॥ ढाल छत्र कच्छप दरशाहीं। ध्वज असिमच्छ सरिस सरसाहीं २८४ ॥ केश सिवार चाम उतराहीं। उरग चरण करबासरि माहीं ॥ महाबगरसे भटके अंग। मज्जा मेद कांज बहुरङ्ग २८५। काई सरिस लसै गज छाला। दुहुं सैना सो कूल बिशाला ॥ पललो पंक भये। भयकारी। चमकहिं रेत रतन दुतिभारी २८६ ॥ रथके चक्रचक्र सरसाहीं। आंत लहरि बर हरिता माहीं ॥ फेन बहै सोइ फेन देखाये। अस्थि राशिकहुं घाट बनाये २८७ ॥ हौदे बहहिं सुनाव समान। तासरि बीर करहिं अस्नान ॥ गीध कांक सारस चकभाये। करहिं कलोल महा मुदछाये२८८ ॥ तट परभट सह परी अमारी। देवालय सोहत रुचिकारी ॥ तहंके द्विज सरदार गनाये। पढ़हिं मंत्र धरु मार सोहाये। २८९ ॥ असि सर शक्ति कुशाकहं देहीं। तुरतहिं प्राण दक्षिणा लेहीं ॥ तासरि महं जेवीर नहाहीं। चढ़ि चढ़ि यान स्वर्गचलि जाहीं २९० ॥

दो० इमि निकसी बाठौर में रुधिर नदी अतिजोर।
महासमर सावन बढ़ी मढ़ी चढ़ी चहुंओर २९१ ॥

चौपाई ॥

तिहि क्षण इन्द युद्ध तहं माच्यौ। काल निहाल ताल दै नाच्यौ ॥ बलि बासव सों भिरे प्रचारी। बरुण हेतिदोउ झगरे भारी ॥ २९२ ॥ मित्र प्रहेति लरहिं अभिमानी। तारक इन्दारक सेनानी ॥ कालनाभ सों यमभरि परना। भिरत भये मय अरु बिधु करना २९३ ॥ त्वष्टा सों संबर रण रोचन। सविता सों बढ़ि भिरो बिरोचन ॥ अपराजित नमुची बलधरसों। दृषपर्वा अश्वनी कुंअर सों २९४ सूर सूर बलि के सत सुतसों। बायु पुलोमा भट बलयुत सों ॥ राहु निशाकरसंगर करहीं। जम्भहपाकपि ये दोउ लरहीं २९५ महिष बिभाव सुवि रच्यो जङ्ग। कविसहंराज हस्पतिसङ्ग ॥ नरक अरक सुत करहिं लराई। उत्कल मदन भिरे रिस छाई २९६ ॥ शुम्भनिशुम्भ महाबल शाली। इन सों लरति

सिंह चढ़ि काली॥ विधि पुवन मों अकृजो पापी। चोप अरे दूल॥ वातापी २९७॥ अनत निवात कवच गण सङ्ग। वसुकालेय कदहिं रङ्ग॥ वीर बरीबरकी नव अङ्ग। करहिं अङ्ग उर पूरि उमङ्ग २९८॥

दो० पौलोमन मों लरत भे विश्वेदेवा देव।
ओंच वतन सों क्रोधवस भिरे रुद्र गुणि भेव २९९॥

भुजंग प्रयात॥

अयो इन्द ऐसो तहां युद्ध भारी। कहै कौन ऐसो अहै बुद्धिधारी॥ महा जोर के तोरसों भट्ट धाए। लगे मारिवे रोसके जोर छाए ३००॥ भरैं खप्परैं योगिनी मोदराचीं। पियैं श्रोणितै जोर नाचैं पिशाचीं॥ बिना शीश के होय कै बीर डोलैं। धरो मारमारौ यही बोल बोलैं ३०१॥ घने प्रेत लै शीशकों गेंद खेलैं। घने आंत की माललै कण्ठ मेलैं॥ घनी राचसी काढ़ि कै वीर आंखैं। महा चाहसों भूमि मैं बैठि चाखैं ३०२॥ घने कं कनिःसंक लोहू नहावैं। घने धूमि आकाश हौरा मचावैं॥ महादेव की मालकों प्रेत केते। घने बीर के शीशकों हाथलेते ३०३॥ घने खोपरीलै पियैं पीप पापी। लहूपान केते करैं जीवतापी॥ किते हाड़कों फेंकते प्रेत केते। घने बीरके शीशकों हाथलेते। कितसुण्डको चाब्हिपूरे चबावैं। करेजा किते काढ़ि कै खूब खावैं ३०४॥ किते खाय सो येसोई युद्धसज्जा। किते भूतनाचैं तनै लाइ मज्जा॥ फिरैं योगिनीलैचढ़ासिंहकाली। भरैखप्परैमोदसोंपूरि हाली ३०५॥ भुजादण्ड की किंकिणी है विशाला। बनी कंठ में मुण्ड की चारु माला॥ लसै आंतकी पागरी शीशभारी। लहू चूनरी है महारंगधारी ३०६॥ लहूरंगही की कढ़ी जीह सो है। कटे शीशकों राखि कै रक्त दोहै॥ हंसैं योगिनी श्रोणितै पान कैकै। बड़े बीर के मुण्डकों हाथ लैकै ३०७॥

दो० इमिसंगर माचोतहां बरणि सकै को तौन।
इन्द्रहिलखकातरभए बलि दानव छितिरौन ३०८॥

चौपाई ॥

दशशर तकि मास्यौ मघवानहिं । गज कहं तीन एक गजवानहिं ॥ जेहे गजपद रक्षक चारो । एक एक शरतिन कहं मारो ३०९ ॥ तबहंसि इन्द्र तिते शरमारी । तिनहिं काटि मग दीनेडारी ॥ सो लखिबलि बलनिधि रिसछाई । महा तेज धर शक्तिउठाई ३१० ॥ तेहि क्षण बासव बाण प्रहारी । काटते काटि भूमि सो डारी ॥ तब त्रिशूल तजि इन्द्रहि डांयौ । ताक्र कहं मगही महं काट्यौ ३११ ॥ प्रास बक्ररि तोमर शरनाना । त्यागनलगे दनुज सिरनाना ॥ जेजे शस्त्र कोपकरि डारे । तेते शक्र शरन सों वारे ३१२ ॥ इन दोउन सम समर मचायो । दुक्ठ न दुक्ठ दलकाल नचायो ॥ तेहि क्षण बलि बलवान नवीनो । अन्त रहित ह्वै माया कीनी ३१३ ॥ तबसब सुर दलऊपर भारी । प्रकट्यौ शैल महा भयकारी ॥ जरत गिरहिं तरुके समुदाई । पर-वतशिखर शिलाअधिकाई ३१४ ॥ निकरे सर्प दर्प धरकारे । सुर दल भक्षणकी मतिधारे ॥ व्यसपति घनेकढ़े तेहिकाल । करत नाश अरि दलविकराल ३१५ ॥ शूललिये कर कज्जल अंगी । धरु धरु बोलहिं निशिचरि नंगी ॥ निशिचर भूत पिशाच बिताल । मारु मारु धरु करहिं कराल ३१६ ॥ बरषहिं घन बक्र गरजि अंगार ॥ बिज्जुपात बरबारहिंबार । धूमकेतु दिशि पूरित ज्वाल ॥ सुरदल दिशि प्रगट्यो तेहि काल ३१७ ॥

दो० बक्ररों उमड्यौ अंबुनिधि चहुंदिशि तें अति घोर ।
जातहलोर अकाश लों करतशोर भरिजोर ३१८ ॥

सो० तब सब सुरभय छायध्यान धस्यौ भगवानको ।
तेहिक्षण तिनमहं आयप्रकटे प्रभु परमाधरन ३१९ ॥
वाहन बने सुपर्न सुन्दर वर्ण सुवर्णसो ।
सुर समूह दुखहर्णभस्यौ असुरदल मरणसो ३२० ॥

कवित्त ॥

भीशवनवारीविश्वगरब प्रहारी चारु तुण्ड पटधारी मन

भारी हरषातभे। पच्छन सों भूषित सुलच्छण ततच्छणही आरत के पच्छण पैं स्वच्छ सरसातभे॥ गिरिधरदास अंग प्रभासों प्रभा निवास गरब बिनाशकारि छबि बरसातभे। देवनर चाहन अदेव दरदाहन सुदेव बर बाहन तदेवदर शातभे॥ ३२१॥

सवैया॥

सब भूषण भूषित अंगबने कटिदिव्य दुकूल औमालगरे। सुकपोलनि कुंडल डोलनिसों सबके मनकों अभिरामहरे। महिअंबरलौं तनकोबिसतारुप्रतापचहूंदिशि भूरि भरे॥ अरि नाशन थी गरु डासन आसन चारु सिंहासन शीश धरे॥ ३२२॥

दो॰ जिमि जिमि चालहिं पच्छकों पच्छी कुल के पाल।
शामबेदघनश्यामप्रियतिमितिमिकढ़तरसाल३२३॥

चौपाई॥

चलतखगेश धरा अकुलानी। अति उच्छल्यो अंबु निधि पानी॥ घूमिरहे घनघने गगनमैं। डोलत पवन प्रचंड दिगन मैं ३२४॥ बिज्जुलता चमकत चहुंओर। करहिं शोहार सकल खगमोर॥ भागे व्यालकाल अनुमानी। उतरि गयो असुरन मुखपानी ३२५॥ सिर सोहत मुकुंद जगस्वामी। आठ बाहु भयमोचन नामी॥ पीठत बसन घन तन बन-माल। अमल कमलदलनयन बिशाल ३२६॥ कुण्डल मुकुट किरीटजड़ाऊ। जिहिलखि लजहिं सूरद्विजराऊ॥ उरहीरन के हारसुहाए। कंकण कटक महा छबिछाए ३२७॥ निज आयुध भूषित सब करमैं। इकइकमहं शतशतरबि भरमै॥ सोहति अलक अहीश लजावनि। जग मन हरणि बनी मुसक्यावनि ३२८॥

दो॰ आवतही भगवान के माया गई नशाय।
देवन पद बंदन करयो असुर रहे खिसिआय ३२९॥

चौपाई॥

काल नेमिदानव तिहिकाल। चल्यो प्रातचढ़ि सिंह

विशाल ॥ काल नेमितन बिस्तरकहई। जगन बीच असको कवि अहई ॥ ३३० ॥ छप्पय ॥

सहस शीश गल सहस सहस पद सहस उदर धर। सहस इष्टमुख सहस सहसनासिका सहसकर ॥ सहससूर सम मुकुट धरे सिरकर कांकण वर। भुज अंगद जग मगत सहस उरहार विमलतर ॥ सहसन अंगुरिन के मणिलसें सहसन सुंदरी छबिभरी। जिमि मंदरलपट्यौ बासुकीतिमि कटिमणि किंकिणिधरी ३३१ ॥ सहसन आयुधधरेभरे निज तेज सकलदिसि सुमनहार बङ्गरेपरेउर भूरिभरेरिसि ॥ चलतधरणि डगमगति अतिहि सोवनतनगावत। करउठाय घनइन्दब्योम बलकन्द फिरावत ॥ बरबेग वायुच सुधाभरी असुरनगह्यौआनन्दमन। लखिकालनेमि कहं काल सम थर थर कांपे देवगण ३३२ ॥ नदीनाह जिमिबढ़ै पर्वमहंतिमि सो बाढ़ो। धरणि चरण शिरब्रह्मलोक लों लगिभोढाढ़ो॥ प्रबलप्रबल शिखि सरिसबीर बाढ़त दरशाई। दूजोनिरखि बिराट सुरन उरसङ्का छाई ॥ बलिछलन बढ़े बामनयथा तिमिरण बाढ्यौ दनुजबर। विंध्याचल सों ऊंचो लसोरोकि सूरथ क्रूरतर ३३३ ॥ भय न गहऊ यहकाहत असुरगणसों अति गरज्यो। गिरे सकलभुवगर्व सुनतलयको घनलरज्यो॥ शिखर बिखरि गिरिगये गिरिनतें महिअकुलानी। आकुल ह्वै उच्छल्यो ब्योमलौं अम्बुधि पानी ॥ सबलोक थोक बहिवे भये धूरि पूरि तिऊंपुर गयो। इमि महा गर्जना करि तवै कालनेमि चलतो भयो ३३४ ॥ धरतचरण थरथरतिधरणि चिकरत दिशाकरि। चपत शेषफण कपत ग्रींव अति भार सींव भरि ॥ कमठ अतिहि अकुलात बिथा धारत बराह रद। तहंलौं कम्पेजीव जहांलौं ब्रह्मअण्ड हद ॥ मुख श्रवण नासिका के बिबर बिन्ध्यदरी के हरहिं मद। इमि चल्यौ कालसों कुपित बढ़ि कालनेमि बिकराल हद ३३५ ॥

दो० कालनेमि को चलत लखि इमिसबअसुरकराल।
महामोदमढ़ि बढ़िभिरे अमरसों तेहिकाल ३३६ ॥

चौपाई ॥

तेहि छण हरिसहाय कहं पाई । चले अमर गण अम-रषछाई ॥ दुइंदलसों अति सङ्गरमांच्यो । रण रस सबहिन को उरराच्यो ३३७ ॥ सिंहसरिस सबदानव देवा । लरहिं चतुर चाहत जयसेवा ॥ बाजन बाजहिं सकल जुझाऊ । उरमहं बढ्यो युद्ध को चाऊ ॥ ३३८ ॥ शंख बजाइ बजाइ रिसाई । बरषहिं बिबिधि शस्त्र समुदाई ॥ महाप्रबलनिज दलतें काढ़िकै । मैंअब सबन बधत यह पढ़िकै ३३९ ॥ काल-नेमि नैरित शिरमण्डन । चल्यौमघवुकी सैना खण्डन ॥ तासु रूपलखि जगत डेरायो । सुरके उरअतिसंशय छायो ३४० ॥ मुखतें तजत कृतायन ज्वाला किया तिहूंपुर परमबिहाला ॥ बढ़िबढ़ि बाहु सकल दिशि ताकी । आयुध भूषित राशि प्रभाकी ३४१ ॥ करनलगीं सुरदल संहार । त्यागण आयुध अस्त्र प्रहार ॥ तनतें काढ़े मेघनभ छावत । गरजतघोरबिज्जु बरसावत ३४२ ॥ मुष्टि प्रहारि बधे बहुयोधा । कर पदतें कितने भरिक्रोधा ॥ तलतें उपतें आयुध भारी । बधे अनेक आसु असुरारी ३४३ ॥

दो० कालनेमि सुरकाल बनि मर्द्यो निर्जर सैन ।
बड़ बड़ योधा मरे अपर परे गतचैन ३४४ ॥

तोटक ॥

बहु बाण सुराधिप अङ्गदियो । गजके सह आसु अडोल कियो ॥ पुनि जीति धनेशहि तोट भयो । गत पाश जलेश करत्त भयो ३४५ ॥ यम जीति सहानुग कोप भर्यौ । निज तुल्य तवै तनचार धर्यौ ॥ शशि सूरज के पुर मैं धसिकै । सब सम्पति आसु हरी हंसिकै ३४६ ॥ सुरकी सुख सोंहत बाह हिलै । अपने सुख राखेउ चाह हिलै ॥ बस बायु कियों पुनि जीति तहां । चलिगो बढ़िकै दिग अन्त जहां ३४७ ॥ सरिता सब काढ़ि धरीं तन मैं । अतिही रिसि तासु भरी मनमैं ॥ जितने जगभूत विकार रहे । जल तेज धरादि पुराण कहे ३४८ ॥ सब थापि शरीर अनन्द भयो ।